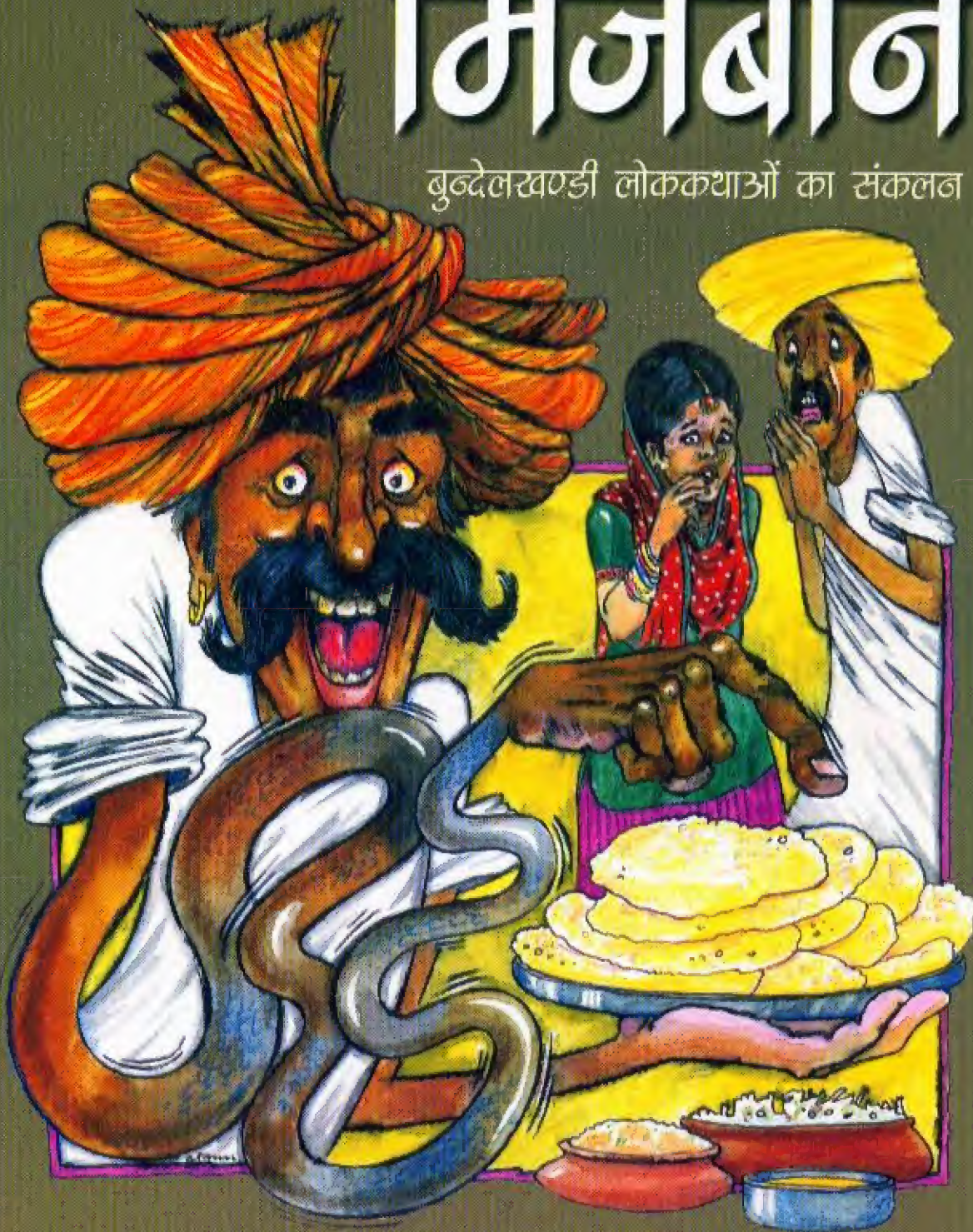


मिजबान

बुद्धेलखण्डी लोककथाओं का संकलन



एकलव्य का प्रकाशन

मिजबान

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन



संकलन, पुनर्लेखन, सम्पादन: प्रदीप चौबे, महेश बसेड़िया

चित्रांकन एवं ले-आउट: अतनु राय



एकलव्य का प्रकाशन

मिजबान

MIJBAAN

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का संकलन

संकलन, पुनर्लेखन, सम्पादन: प्रदीप चौबे, महेश बसेड़िया

चित्रांकन एवं ले-आउट: अतनु राय



©एकलव्य / मार्च 2010 / 5000 प्रतियाँ

इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से इसी तरह के कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

कागज़: 90 gsm मेपलिथो एवं 170 gsm आर्ट कार्ड (कवर)

ISBN: 978-81-89976-48-4

मूल्य: 30.00 रुपए

प्रकाशक: एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोन: (0755) 255 0976, 267 1017

फैक्स: (0755) 255 1108

www.eklavya.in

सम्पादकीय: books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन: (0755) 258 7551

इस बुन्देलखण्डी कहानी संग्रह के बारे में...

किस्से-कहानी कहना और सुनना पुरातन काल से ही भारतीय संस्कृति की समृद्धशाली परम्परा रही है। अभी ज़्यादा समय नहीं बीता है कि जब हमारे ग्रामीण अंचलों में साँझ ढलते ही गाँव के किसी बुजुर्गवार की चौपाल पर बैठकें जम जाया करती थीं और चल पड़ता था किस्सा-कहानियों का ऐसा दौर कि कब आधी रात बीत जाती पता ही नहीं चलता था। ये सब बातें आज स्मृतियाँ ही बनती जा रही हैं। आजकल न तो वैसी चौपाल बची है और न ही वैसे किस्साकार। हाँ, यदि कुछ बचा है तो वह लोगों के मानसपटल पर अंकित धुँधली-सी छवि लिए हुए वे किस्से-कहानियाँ हैं जो वर्षों पहले हमने दादा-दादी, नाना-नानी अथवा अपने किसी बूढ़े-सयाने के मुँह से सुन रखी थीं।

ये कहानियाँ हमारी स्मृति से विस्मृत न होकर चिरजीवी बनी रहें, समय के धाराप्रवाह में बहकर खत्म न हो जाएँ, ऐसा ही प्रयास एकलव्य होशंगाबाद के बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम के तहत मैंने और मेरे साथियों ने किया है। इसके तहत गाँवों में कहानी कार्यशालाओं का आयोजन कर पुराने किस्साकारों से सम्पर्क साधा गया और उन्हीं की जुबानी कहानियाँ सुनकर संग्रह हेतु चुनी गई हैं। हम चाहते हैं कि ये कहानियाँ अपने बुन्देलखण्डी स्वरूप में ही बच्चों एवं वयस्क पाठकों के समक्ष पहुँचें ताकि इनकी मौलिकता और भाषाई लालित्य बना रहे।

इस संकलन का मूल उद्देश्य बिखरी हुई कहानियों को समेटकर इन्हें अलग-अलग प्रान्तों के बच्चों तक पहुँचाना है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में इन कहानियों के माध्यम से शाला में पठन-पाठन और समझने का माहौल तैयार करना है।

मैं उन सभी साथियों का आभारी हूँ जिन्होंने इस संकलन में आगे बढ़कर सहयोग किया। इन कहानियों को बार-बार सुनकर हमारा हौसला बढ़ाने में होशंगाबाद ज़िले में चल रहे पुस्तकालयों के बच्चे, उनके पालक और एकलव्य होशंगाबाद के साथी सी.एन. सुब्रह्मण्यम शामिल थे। इसके अलावा श्री रामभरोस शर्मा, शा. प्रा. शाला मारागाँव, श्री रोहित शुक्ला, शा. प्रा. शाला सतवासा, श्री अजय दुबे, शा. प्रा. शाला ई. जी. एस सतवासा, श्री मनोज साहू, शा. प्रा. शाला बछवाड़ा, श्री अंजनी कुमार दीवान, शा. प्रा. शाला पीपरपानी, श्री राजेन्द्र सिंह राजपूत, शा. प्रा. शाला सराकेसली, श्री गंगाराम सोनिया, खुटवासा, श्री रामभरोस नामदेव तथा श्रीमती जया बसेड़िया, होशंगाबाद ने इस पूरे काम में तरह-तरह से मदद की है। हम इन सभी के आभारी हैं।

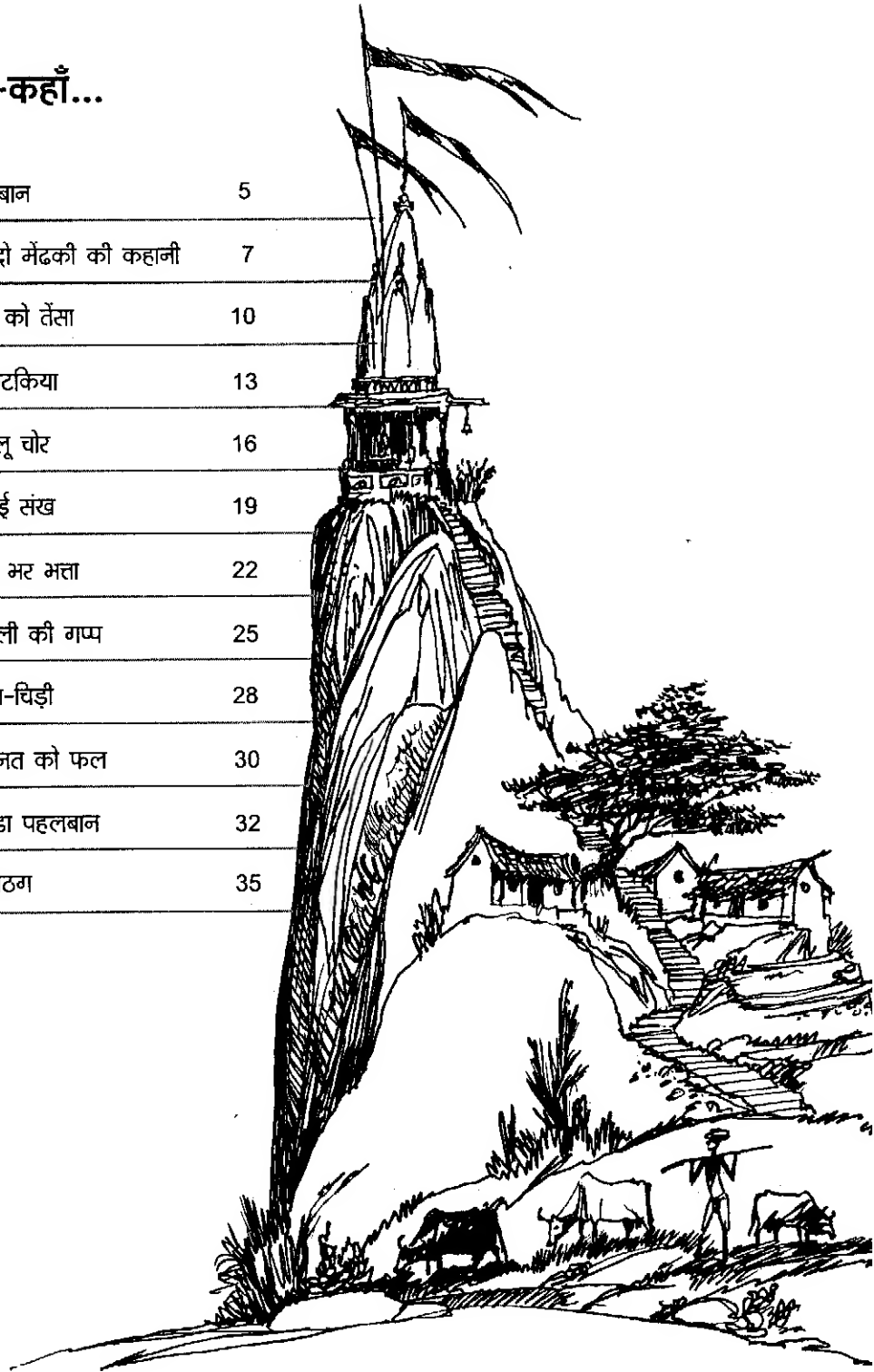
इन कहानियों में बहुत रस है, बहुत-से स्वाद हैं। आइए, हमारे मिजबान बनकर इनका आनन्द लीजिए।

प्रदीप चौबे

एकलव्य, होशंगाबाद

क्या-कहाँ...

1 मिजबान	5
2 मिन्दो मेंढकी की कहानी	7
3 जेसे को तेसा	10
4 लकटकिया	13
5 लल्लू चोर	16
6 जादुई संख	19
7 पता भर भत्ता	22
8 दिल्ली की गप्प	25
9 चिड़ा-चिड़ी	28
10 मेहनत को फल	30
11 पण्डा पहलबान	32
12 महाठग	35



मिजबान



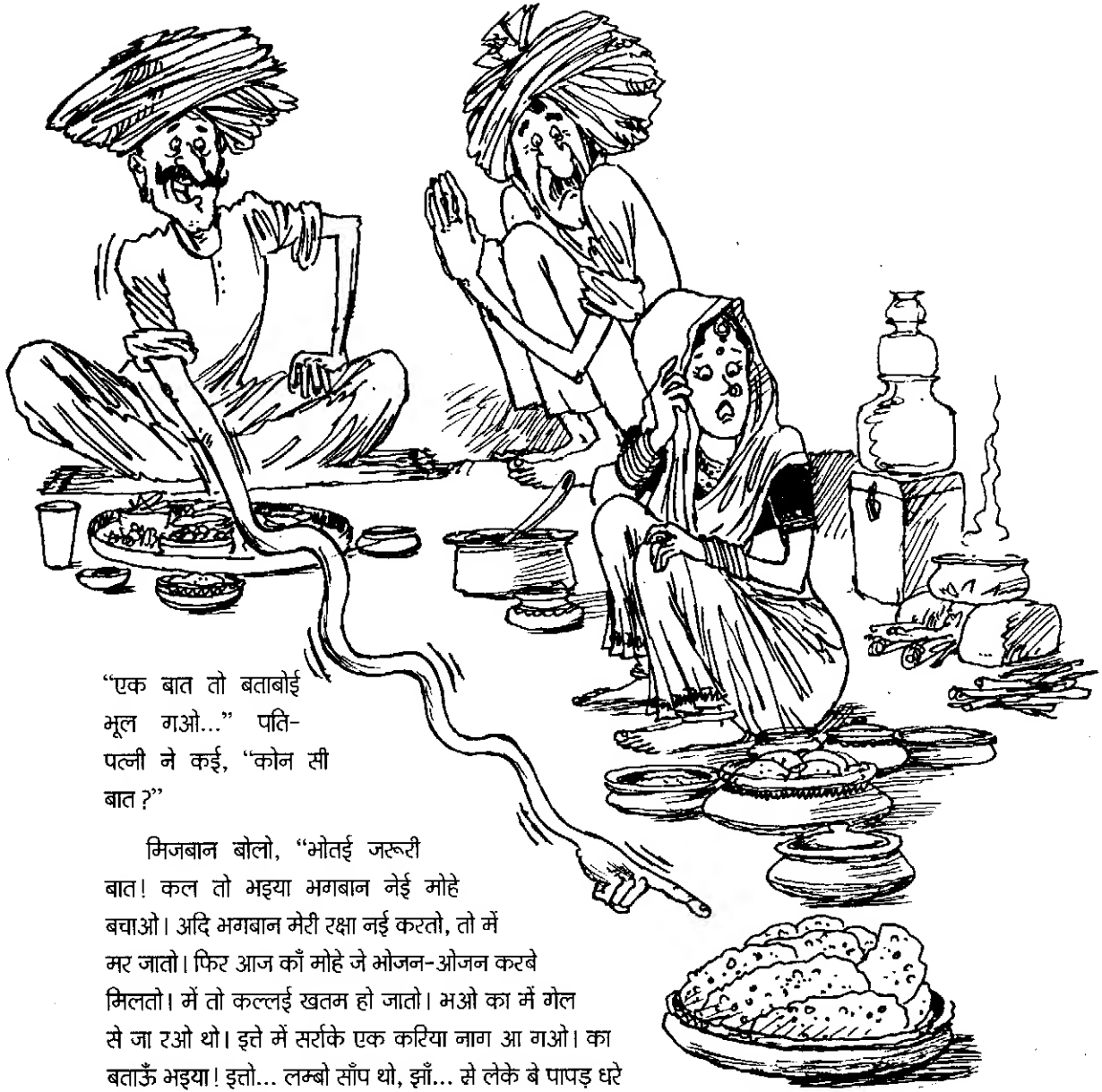
परबार में पति-पत्नी रहत थे। दोई बड़े प्रेम से अपनो जीवन बिता रए थे। एक बार का भओ – बिनके घर मिजबान आए, मिजबान आए तो दोई बड़े खुस भए। बिनको सुआगत करो। कई, “भोत दिना बाद आप आए हें।” मिजबान हे जलपान करबाओ।

दिन डूबे बे जान लगे तो पति-पत्नी ने कई, “ऐसे कैसे जे हो! बिना रोटी खाए हम नई जान दें।” भोजन के लाने बिन्हें रोक लए। मिजबान बड़े खास थे, जासे बिनके लाने एक से एक पकवान बने। बिन्हें जिती भी खाबे की चीजें पसन्द थीं बिनमें सबसे जादा पसन्द थे पापड़! भोतई जादा!! अति से जादा!!! अदि खाबे में पापड़ मिल जाएँ तो बे बड़े खुस।

थारी परस दई तो मिजबान हाथ-मों धोके खाबे बेट गए। थारी में पापड़ नई देखके बिन्हें लगो की बाद में पापड़ परस हें। पर जब पति ने हाथ जोड़के कई, “चलो भइया जेबो सुरू करो,” तो मिजबान को मन बेट गओ। काय से पापड़ बने थे, पापड़ों की थारी बिन्हें चोंका में धरी दिख भी रई थी, पर बे सरम के मारे कछु बोले नई। पति-पत्नी सुइ पापड़ परसबो भूल गए थे। पति भोजन परसन लगो ओर पत्नी ताती-ताती रोटी बनान लगी। मिजबान भोजन करन लगे पर ले देके बिनको ध्यान पापड़ों पेई चलो जाए। सिके पापड़ चूल्हे के पास धरे थे, बे ऊँचे-ऊँचे फूले-फूले दिख रए थे।

मिजबान ने बड़े रूचके सब चीजें खाई – भजिया, बरफी, लड्डू, खीर-पुड़ी; मगर बिनको ध्यान ले देके पापड़ों पेई जाए। बे सोचें अदि में पापड़ नई खा पाओ तो काहे की मिजबानी? बो मनई-मन सोच रओ, फिकर कर रओ की भइया-भोजी हे पापड़ परसबे की अब ध्यान में आहे तब ध्यान में आहे। जिनने धीरे-धीरे खाओ। पर जब समझ में आई, बिन्हें याद नई आ रई तब बाने जुगत लगाबे की सोची, जासे पापड़ खाबे मिल जाएँ। बाने कई,





“एक बात तो बताबोई
भूल गओ...” पति-
पत्नी ने कई, “कोन सी
बात?”

मिजबान बोलो, “भोतई जरूरी
बात! कल तो भइया भगवान नेई मोहे
बचाओ। अदि भगवान मेरी रक्षा नई करतो, तो में
मर जातो। फिर आज काँ मोहे जे भोजन-ओजन करवे
मिलतो। में तो कल्लई खतम हो जातो। भओ का में गेल
से जा रओ थो। इत्ते में सर्राके एक करिया नाग आ गओ। का
बताऊँ भइया! इतो... लम्बो साँप थो, झाँ... से लेके बे पापड़ धरे
हैं भाँ... तक लम्बो।”

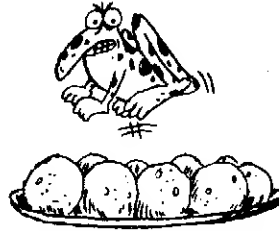
जो बाने हाथ से इसारो करो पापड़ की थारी तक, तो पति-पत्नी एक साथ बोले, “अरे अपन पापड़ परसबो तो
भूलई गए।” मिजबान ने कई, “अब रहन दो।” पति-पत्नी बोले, “ऐसे कैसे रहन दें? जे तो खानेई पड़हें।”
मिजबान ने कई, “अच्छा तो अब पापड़ों की थरिया लेई आओ।”



मिन्दो मेंढकी की कहानी

डुकरिया थी। बा एक दिना धूरा में गाँकड़ें बना रई थी। इते में एक मिन्दरिया भाँ आई। बाने डुकरिया से कई, “डुक्को-डुक्को धूरा में गाँकड़ें काय बना रई हे?” डुक्को बोली, “बिन्ना, मेरे पास लकड़ी कण्डा नईहाँ।” मिन्दरिया बोली, “बस इती सी बात!” बा जंगल गई ओर भाँ से लकड़ी-कण्डा लान के डुकरिया हे दे दए। डुकरिया ने गाँकड़ें बना लई। अब मिन्दरिया डुकरिया की जा गाँकड़ पे कूदे बा गाँकड़ पे कूदे। तो डुकरिया बोली, “मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरी गाँकड़ों पे काय कूद रई हे?”

मिन्दरिया बोली, “जंगल जानी लकड़ी लानी,
लकड़ी मेंने तोहे दीनी,
तू का मोहे एक गाँकड़ न देहे?”



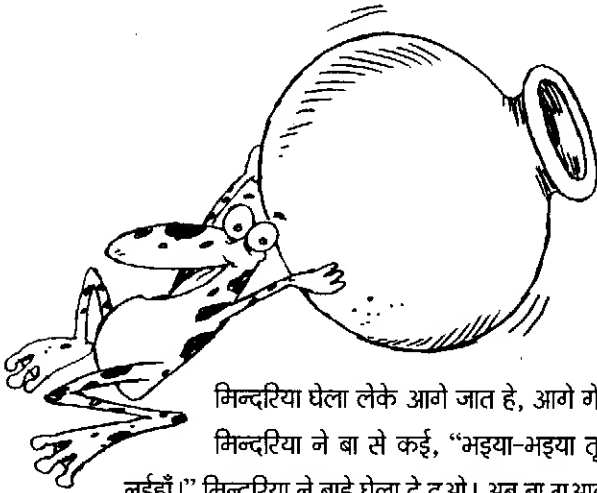
डुकरिया बोली, “ले बिन्ना रुक, गाँकड़ ले ले।”

मिन्दरिया गाँकड़ लेके आगे जात हे। बाहे गेल में एक कुम्हार दिखो। बो घेला बना रओ थो, उतई बाको मोड़ा बेठो भेंक रओ थो। मिन्दरिया बोली, “दददा जो मोड़ा काय रो रओ हे?” कुम्हार बोलो, “जो भूँको हे।” मिन्दरिया ने बाहे गाँकड़ दे दई। मोड़ा मोंगके गाँकड़ खान लगो। अब मिन्दरिया कुम्हार के जा घेला पे कूदे बा घेला पे कूदे। कुम्हार बोलो, “मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरे घेलों पे काय कूद रई हे?”



मिन्दरिया बोली, “जंगल जानी लकड़ी लानी,
लकड़ी मेंने डुक्को दीनी,
डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,
गाँकड़ मेंने तोहे दीनी,
तू का मोहे एक घेला न देहे?”

कुम्हार बोलो, “ले बाई, घेला ले ले।”



मिन्दरिया घेला लेके आगे जात हे, आगे गेल में एक गुआला मिलत हे। बो छन्नी में भेंस दुह रओ थो। मिन्दरिया ने बा से कई, “भइया-भइया तू छन्नी में दूध काय लगा रओ हे?” गुआला बोलो, “घेला नईहाँ।” मिन्दरिया ने बाहे घेला दे दओ। अब बा गुआला की जा भेंस पे कूदे बा भेंस पे कूदे।

गुआला बोलो, “मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरी भेंसों पे काय कूद रई हे?”

मिन्दरिया बोली, “जंगल जानी लकड़ी लानी,
लकड़ी मेंने डुक्को दीनी,
डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,
गाँकड़ मेंने कुम्हार हे दीनी,
कुम्हार मोहे घेला दीनी,
घेला मेंने तोहे दीनी
तू का मोहे एक भेंस न देहे?”

गुआला बोलो, “ले, जा भेंस ले ले।”



मिन्दरिया भेंस पे बैठके चल दई। आगे गेल में बाहे आम के नीचे राजा बेठो मिलो। बो सूखो भात खा रओ थो। मिन्दरिया बोली, “राजा-राजा तू सूखो भात काय खा रओ हे?” राजा बोलो, “घी दूध नईहों।” मिन्दरिया बोली, “ले, जा भेंस ले ले।” अब मिन्दरिया राजा की जा रानी पे कूदे बा रानी पे कूदे। रानिहें डर के मारे रो न लगी। राजा बोलो, “मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरी रानियों पे काय कूद रई हे?”

मिन्दरिया बोली, “जंगल जानी लकड़ी लानी,
लकड़ी मेंने डुक्को दीनी,
डुक्को मोहे गाँकड़ दीनी,
गाँकड़ मेंने कुम्हार हे दीनी,
कुम्हार मोहे घेला दीनी,
घेला मेंने गुआला हे दीनी,
गुआला मोहे भेंस दीनी,
भेंस मेंने तोहे दीनी,
तू का मोहे एक रानी न देहे?”



राजा बोलो, “ले बाई, जा रानी ले जा।” मिन्दरिया रानी के संगे चल दई। आगे गेल में बाहे बाजा बजाबे बारो मिलो। बो बेठो-बेठो रो रओ थो। मिन्दरिया बा से बोली, “काय भइया तू काय रो रओ हे?” बो बोलो, “मेरी लुगाई नईहों।” मिन्दरिया ने बाहे रानी दे दई। अब मिन्दरिया बाके जा बाजे पे कूदे बा बाजे पे कूदे। बाजा बारो बोलो, “मिन्दरिया-मिन्दरिया तू मेरे बाजों पे काय कूद रई हे?”

मिन्दरिया बोली, “जंगल जानी लकड़ी लानी,

लकड़ी मेंने डुकको दीनी

डुकको मोहे गाँकड़ दीनी,

गाँकड़ मेंने कुम्हार हे दीनी,

कुम्हार मोहे घेला दीनी,

घेला मेंने गुआला हे दीनी,

गुआला मोहे भेंस दीनी,

भेंस मेंने राजा हे दीनी,

राजा मोहे रानी दीनी,

रानी मेंने तोहे दीनी,

तू का मोहे एक बाजो न देहे ?”



बाजा बारो बोलो, “ले बाई, जो बाजो ले जा।”

मिन्दरिया बाजा लेके चली। आगे गेल में बाहे पीपर को भोट बड़ो पेड़ मिलो। बा उतई सुतान लगी। इत्ते में भाँ भड़या आ गए ओर बे सब चोरी को सामान धरती पे फेलाके हिस्सा बाँटो करन लगे। मिन्दो ने आओ देखो न ताओ जोर-जोर से बाजा बजान लगी। भड़या डर के मारे भग गए। असफेर के गाँओं बारे भगे-भगे आए। जिनके इत्ते चोरी भई थी, बिनको सामान मिन्दो ने लोटा दओ। सबरे गाँओं बारे मिन्दो की जय-जयकार करन लगे।



जैसे को तैसा



माताराम थी, बाको एकई मोड़ा थो। जब मोड़ा बड़ो हो गओ तो माताराम ने मोड़ा को धूमधाम से ब्याओ कर दओ। माताराम ने मोड़ा के लाने किराने की दुकान भी खुलबा दई। बढ़िया दुकान चले, काय से गाँओं में एकई दुकान थी। बा से घर को खरचा चले।

मनो भाग से बहु भोट तेज निकरी? मोड़ा जब दुकान पे जाए बहु माताराम हे भोटई परेसान करे। कुल मिलाके जिती जादा सास की आतमा दुख सके बा उतो दुख पोंहचाए। माताराम इती समझदार थी कि बा मोड़ा हे कछु नई बताए। माताराम ने सोची अगर में मोड़ा हे बताहूँ तो बेकार की असान्ति हुए। ऐसी सोच के जा बात हे मन मेई रखे। मोड़ा बड़ो समझदार थो। माताराम हे अनमनी देखके जा जरूर समझ गओ की कछु गड़बड़ हे। एक दिन का भओ, बहु ने सास से कई, “का अदि मेंने तोहे मुण्डी ने करबा दई तो में अपने बाप की ओलाद नई।” ऐसी बहु ने जिद्द ठान लई। सास ने भी बहु से कई, “ऐसे कैसे मुण्डी करबाहे देख लेहूँ तोहे।”

एक दिन बहु ने भोट नाटक-नोटकी रची। बाने अपनी तबियत खराब को बहानो कर लओ ओर खटिया पे पड़ गई। बा न कोई से बोल रई न चाल रई, न हल रई न डुल रई, खाबो-पीबो भी बन्द कर दओ। गाँओं भर में बाकी बीमारी को हल्ला मच गओ। धीरे-धीरे करके गाँओं के सब लोग जुड़ गए। एक दादा ने पूछी, “बहु कैसी तबियत हे?” बहु मरी-सी आबाज में बोली, “मेरी तबियत भोटई खराब हे, मेरे प्राण निकर जाहें।” अब पूरे गाँओं बारे परेसान, खूब दबा-दारू करबा रए हैं पर बहु ठीकई नई भई। इसे में गाँओं को सबसे बूढ़ो आदमी आओ। बाने कई, “बहु जा बताओ ऐसी तबियत पहले कभऊँ खराब भई थी।” बहु ने कई, “दादा हमरी तबियत तो पहली बार खराब भई हे। पर हमरे गाँओं में एक बहु की तबियत बिलकुल हमरे जैसी बिगड़ी थी। बा बहु की सास के बालों को मुण्डन करबाके ओर उन बालों हैं पुटरिया में रखके बिनने बहु के ऊपर से पाँच बार उतारके नदी में सिराए,



तब जाके बा ठीक भई थी।” बूढ़े दादा बड़े ध्यान से सुन रहे थे। बिनने कई, “बहु की जान बच जाए जोई करो।” बिचारी माताराम चुपचाप सब तमासो देख रई थी।

अब जल्दी से नाई हे बुलबाओ ओर माताराम को मुण्डन करबाओ। बालों हे पुटरिया में रखके बहु के ऊपर से पाँच बार उतारके नदिया में सिरा दए। बहु तो नाटक करई रई थी बा तुरतई बिलकुल अच्छी हो गई।

रात के समय मोड़ा सहर से दुकान को सामान लेके लोटो, तो बाहे सब बात पता चली। बो समझ गओ भोत दिक्कत हो गई हे। मगर मोड़ा बड़ो समझदार थो, बो कछु नई बोलो। बाने सोची जब बखत आहे तब देख हूँ। जाको बदला जरूर लेहूँ।

जब मोड़ा दुकान पे जाए तो बहु चकिया लेके बेटे ओर कछु भी पीसबे रख ले। चकिया चलात जाए ओर गात जाए, “मैंने ऐसी टेक निभाई मेरी सास की मूढ़ मुड़ाई, मैंने ऐसी टेक निभाई...” जो गीत सुनके माताराम बड़ी दुखी होए, भोत परेसान रहे। फिर भी जा बात माताराम ने अपने मोड़ा हे नई बताई।

एक दिन का भओ की, मोड़ा दुकान बन्द करके दुफेर मेई घर आ गओ। जैसई घर के भीतर घुसो बाने देखो, बहु चकिया चला रई हे ओर बोई गीत गा रई हे, “मैंने ऐसी टेक निभाई मेरी सास की मूढ़ मुड़ाई, मैंने ऐसी टेक निभाई...” मोड़ा हे भोत गुस्सा आई। पर बाने सोची में ईंट को जबाब पथर से देहूँ।

अब मोड़ा सीधो अपनी सुसरार पोंहचो। पोंहचतेई से जोर-जोर से रोने लगे। बाके सुसर-सास, सारे सब घबरा गए की लालाजी हे का हो गओ? का घर में कछु बुरो हो गओ? सुसर ने पूछी, “लालाजी बताओ तो का बात हे, का तकलीफ हे?” लालाजी रोट-रोत बोले, “तुमरी मोड़ी की तबियत कछु दिना से भोतई खराब हे। हमने बाको भोत इलाज कराओ मनो बाहे कछु आराम नई पड़ रओ। एक गुनिया ने बताओ हे बाहे भोतई खतरनाक प्रेत बाधा लगी हे। अगर बा बाधा दूर नई भई तो तुमरी मोड़ी खतम हो जाहे। बा खतम भई तो हमरी माताराम खतम हो जाहें ओर बिनके बाद में खतम हो जेहूँ। बाके बाद तुमरे घर भी ऐसई हुए। एक-एक करके सब मर जेहें। सब सत्यानास हो जेहे।”

सबरे बड़े परेसान अब का करें? सुसर ने पूछी, “लालाजी गुनिया ने प्रेत बाधा दूर करबे काजे कछु उपाओ बताओ हे की नई?” लालाजी बोले, “जा बाधा ने गुनिया से कई हे का मोड़ी हे तबई छोड़हूँ, जब जाके सबरे मायके बारे मोड़ा-मोड़ी से लेके डुकरा-डुकरिया तक, अपनो मुण्डन करबाके सबरे बाल एक पुटरिया में रखके





मोहे दे देहें।” सबने सूद सला करी, सोची मुण्डन करबाबे से जा बला टर रई हे तो बा में कछु हरज नई।

तुरतई गाँओं के सबरे नाइयों हे बुलबाओ। परबार के सबरे लोग आँगन में लाइन लगाके बठ गए, बड़ो परबार थो पचास-साठ लोगो को। नाइयों ने सबको झलदी-झलदी मुण्डन करो। मुण्डन के बाल एक पुटरिया में बाँधके लालाजी ने कई, “में झलदी-झलदी घोड़ा गाड़ी से गाँओं निकर रओ हूँ। आप लोग अपने-अपने साधनों से गाँओं पोंहचियो।” मोड़ी सबकी लाइली थी जाके मारे सबरे मायके बारे अपने-अपने साधनों से बाहे देखबे चल दए।

उते मोड़ी चकिया चलात-चलात डुकरिया हे चिड़ाबे लगी थी, “मेंने ऐसी टेक निभाई मेरी सास की मूढ़ मुड़ाई, मेंने ऐसी टेक निभाई...” मोड़ा जब घर में घुसो तो बई के पीछे-पीछे मोड़ी के मायके बारे भी आ गए। मोड़ा ने घरबारी से आँगन की तरफ इसारा करके कई, “देख उते।” ओर बो गान लगे, “मेंने ऐसी टेक निभाई मुण्डों की लेन लगाई, मेंने ऐसी टेक निभाई...” मोड़ी ने आँगन के दरबज्जे पे देखो तो धक्क से रह गई। सबरे मायके बारे खड़े हैं – सबके सब मुण्डे! बा समझ गई – जो जैसो करहे बो बेंसो भरहे।



लकटकिया

बुढ़िया

को एक मोड़ा हतो बाको नाम थो “लकटकिया”। बो गाँओं पटेल के ढोर चरात थो। एक बार बो ढोर चरा रओ थो, भई से कछु लोग नरबदा नहान जा रए थे। लकटकिया ने पूछी, “काय भइयाहुन तुम काँ जा रए हो?” बिनने कई, “हम नरबदा नहान जा रए हैं।” लकटकिया ने कई, “मोहे भी ले चलो।” सबने कई, “चले चल।” बो सब ढोरों हे लेके उनके संगे चल दओ।

नरबदाजी पोंहोचके सब जनों ने इसनान करो। इसनान के बाद पण्डज्जी ने सबके टीका लगाओ, सबने बिन्हें दक्षणा दर्ई। अब लकटकिया की जेब तो खाली हती। बो बड़े सोच में पड़ गओ पण्डज्जी हे का दऊँ। इते में पण्डज्जी जी ने बाहे टीका लगाओ। बाने ढोरों में से एक बछड़ा लाके दान कर दओ। पण्डज्जी खुसी से फूले नई समाए ओर बाकी बड़ाई करन लगे। इते में दूसरे पण्डत आके सबके टीका लगान लगे। लकटकिया ने आओ देखो न ताओ ओर सबे एक-एक ढोर दान करन लगे। सबई पण्डत बाकी जय-जयकार करन लगे। बोले, “हमने इतो बड़ो दानी पहले कबहूँ नई देखो।” लकटकिया के संगबारों ने कई, “तू बड़ो मूरख हे, ऐंसे दान कर रओ हे जेंसे तू कहीं को पटेल हे?” लकटकिया हे पटेल की याद आ गई, बाने सोची अब में मरो। बिना ढोरों के घर जेहूँ तो पटेल तो मेरी जान ले लेहे। बाने सोची, अब में घरई नई जेहूँ। जो तो बड़ो खूँतो हो गओ हे। बो भई रेटा में मूढ़ पकड़के बठ गओ। दिन डूबे सब लोग अपने-अपने घर चले गए। रात हो गई, लकटकिया हे भूँक लग आई। जब भूँक सहन नई भई तो बाने अपने घर की गेल पकड़ी।

उते गाँओं में पटेल अगल परेसान हो रओ थो कि अमे तक ढोर बापस नई आए। लकटकिया की बूढ़ी माँ ने तो चिन्ता-फिकर में रोटी भी नई खाई। बा सोचे, “इत्ती देर तो कम्भऊँ नई भई, राम जाने का हो गओ?” इते में हाँपत-हाँपत भूँको-प्यासो लकटकिया अपने घर पोंहचो। बुढ़िया ने पूछी, “इत्ती देर कैसे भई ओर ढोर किते हैं?” लकटकिया ने बुढ़िया हे पूरी बात बता दर्ई। बुढ़िया के काटो तो खून नई, भुनसारे पटेल न जाने का करहे। बाने सोची रातों-रात गाँओं छोड़बे मेई भलो हे। बाने लकटकिया हे झल्दी-झल्दी रोटी खिलाई ओर अपने सामान की





पुटरिया बाँध लई। लकटकिया ने अपनी गुलेल साथ में रख लई। दोई घर से निकर पड़े। रस्ते में घनो जंगल थो। लकटकिया रस्ते में से कंकड़-पथर बीनके अपनी गुलेल से इते-उते मारत चल रओ थो, कायसे कोई जंगली जानबर जोरे न आए।

चलत-चलत भुनसारे दोई एक गाँओं में पोंहचे। लकटकिया के हाथ में एक पथर बच गओ थो। बुढ़िया ने लकटकिया से कई, “जा बेटा कछु खाबे काजे लिआ।” बुढ़िया भई बैठ गई। लकटकिया एक दुकान पे गओ और बाने गुड़-फुटाने मंगे। दुकानदार ने जाके हाथ में पथर देखो। बो हीरा हतो। दुकानदार ने बाहे पकड़ो और सीधो राजा के जोरे ले गओ। राजा ने बासे पूछी, “जो हीरा काँ से लाओ हे?” लकटकिया ने कई, “रात में जंगल में, ऐंसे भोत से पथर इते-उते फेंके हैं।” राजा ने कई, “तू ऐंसी एक ओर पथर लेके आ, नई तो तोहे फाँसी चढ़बा देहों।”

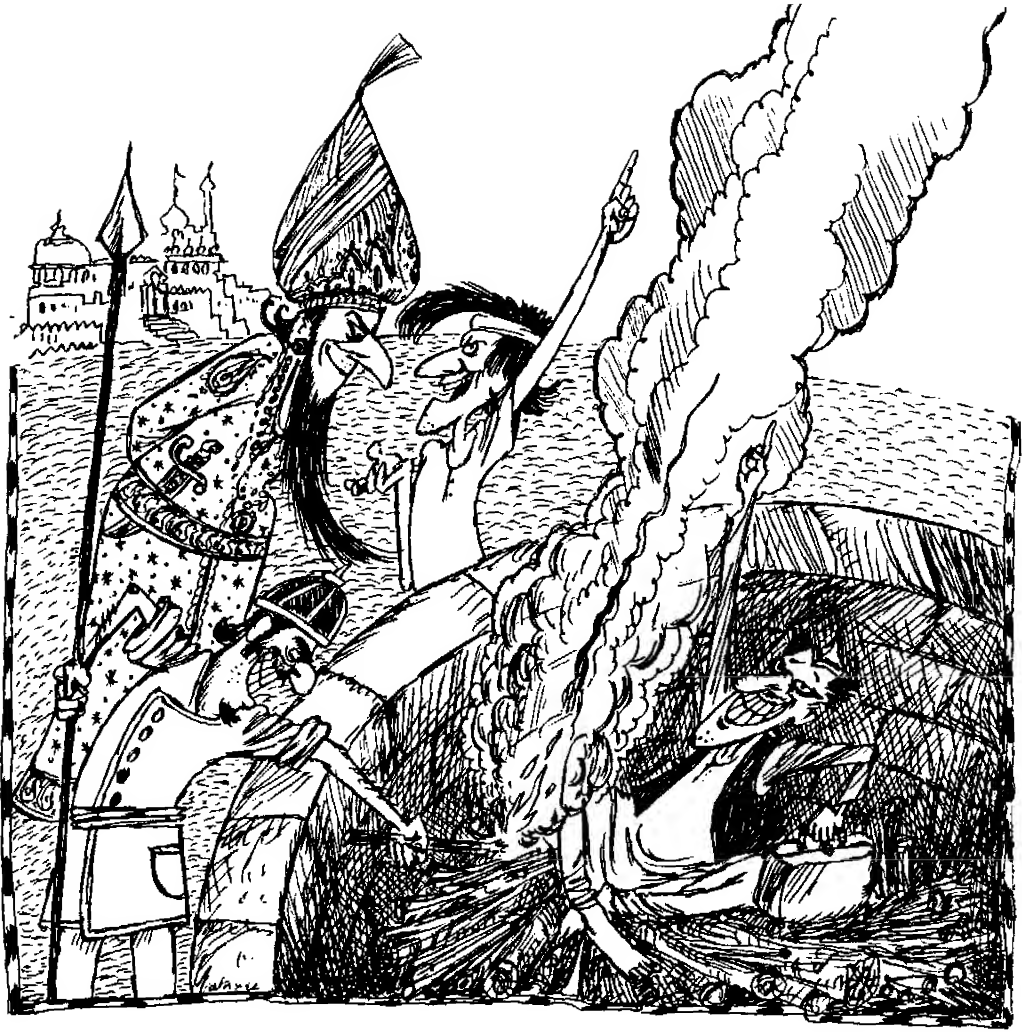
बो डरके मारे बापस जंगल में जाके बेंसई पथर ढूँढन लगो, पर बाहे फिर बे पथर नई मिले। रात हो गई, जंगली जानबर बोलन लगे तो डरके मारे बो एक पेड़ पे चढ़ गओ। कछु देर बाद भाँ एक परी आई। बा पेड़ के नीचे बैठके बाँसुरी बजान लगी। लकटकिया बाहे देखके पेड़ के नीचे उतर आओ, परी ने लकटकिया हे देखो। परी हे बरदान हतो, जो कोई आदमी बाहे देख लेहे परी हे बासेई ब्याओ करनो पड़हे। परी ने लकटकिया हे सारी बात बता दई।

लकटकिया बाहे घर लेके आ गओ। लकटकिया ने परी हे अपनो हाल बताओ। परी ने कई, “इती सी बात!” बाने अपने जादू से हीरा ला दओ। भुनसारे लकटकिया हीरा लेके राजा के जोरे पोंहचो। राजा भोत खुस भओ, बाने लकटकिया हे इनाम देके बिदा करो। बाद में राजा ने सोची हो सकत हे जा पे अबे ओर भी हीरा हों। जा से राजा ने अपने चतुर चालाक नाई हे जासूसी करबे काजे लकटकिया के घर भेजो। दूसरे दिना नाई ने आके राजा के कान में कई, “महाराज लकटकिया की ओरत तो परी जेंसी खपसूरत हे! तुम बाहे रख लेनो, में तुमरी एक रानी हे रख लेहूँ।” राजा नाई की बात मान गओ।

अब नाई ने लकटकिया हे मारबे की सोची। नाई ने राजा से लकटकिया हे आदेस दिलबा दओ कि तू सुरग जाके हमरे आज-पराजे की खबर लेके आ। लकटकिया ने राजा से पूछी, “राजा साब में सुरग कैसे जाऊँगो?” राजा साब बोले, “हमने एक कुआ खुदबाओ हे। बा में तोहे बिठाके, लकड़ी डारके आगी लगा देहें। तू धुँआ के संगे सीधो सुरग पोहोच हे।” लकटकिया ने जा बात बाकी ओरत हे बताई। घरबारी तो परी थी, बाने लकटकिया हे कुआ में से जादू के जोर से अन्दरई-अन्दर घर ले आई।

नाई हे जा बात पता चली तो बाने तुरतई जाके राजासाब हे खबर करी। राजा ने अपने सेनिक भेजके लकटकिया हे बुलबाओ और बासे पूछी, “सुरग में हमरे आज-पराजे कैसे हैं?” लकटकिया ने कई, “सबरे मजे से हें महाराज, पर सबके जटा-जूट खूब बढ़ रए हें काय से उते भोत मेंघाई हे। भाँ को नाई एक दाढ़ी बनाबे के सो रुपैया और कटिंग के पाँच सो रुपैया लेत हे।” नाई ने सोची इती मेंघी दाढ़ी-





कटिंग ? बाने राजा साब से कई, “में सुरग जाऊँगो ओर सबकी दाढ़ी-कटिंग बानाके लोट आऊँगो।” राजा साब मान गए, बिनने नाई हे कुआ में डरबाके आग लगबा दर्ई।

जब भोत दिना हो गए तो राजा साब ने लकटकिया से पूछी, “नाई अबे तक सुरग से नई आओ ?” लकटकिया बोलो, “लगत हे नाई लालच में पड़ गओ हे, अब बो नई आए। बेंसे भी सुरग जाके कोन बापस आनो चाहेगो।” राजा समझ गओ जो बड़ो चतुर-चालाक हे। बाने लकटकिया हे अपनो मंत्री बना लओ।

लल्लू चोर



हतो लल्लू, अकल से थो बो बुद्धू। बो कछु काम-धाम करत नई थो, दिन भर आबारा जैसो धूमत रहत थो। एक बार धूमत-धूमत पोंहच गओ जंगल में ओर उते आम के पेड़ पे चढ़के आम तोड़के खान लगो। इते में बाने देखो चार जने आके पेड़ के नीचे बैठ गए ओर बतियाज लगे। लल्लू चिमाई लगाके बिनकी बात सुनन लगो। बे चारई चोर हते ओर रात में कोई के घर चोरी करबे की बतिया रए थे। इते में लल्लू की जब से एक बड़ो-सो आम एक चोर के मूढ़ पे टपक गओ। चोर उतई बेहोस हो गओ। तीनई चोरों ने घबराके

ऊपर देखो, तो पेड़ पे बैठो लल्लू दिखाई दओ। लल्लू ने बिनसे कई,

“अभे तो मेंने एकई हे मारो हे। तुम लोग चोरी करत हो जा बात राजा साब से केहूँ।” चोर डर गए ओर लल्लू के हाथ-पाँओ जोड़न लगे। बे बोले, “भइया तू हमसे चाहे जो कछु ले ले, मनो राजा साहब से जा बात मत कइए। बे हमें फाँसी पे लटकबा देहें।” लल्लू ने कई, “मेरी अम्मा मोसे गुस्सा रहत हे की में कछु करत-धरत नई हूँ। ऐसो करो मोहे भी तुमरे संगे कर लो।”

चोर मान गए।



आधी रात में बे लोग एक गाँओं में चोरी करबे गए। जे घर में चोरी करनो थो बाके पास पोंहचे तो लल्लू चोरों से बोलो, “भइया मेंने पहले कमऊँ तो चोरी करी नई, जा बताओ जा घर में से का चुरानो हे?” चोरों को सरदार बोलो, “भारी-भारी सामान चुरानों।” बाको मतलब थो – जेबरों में से मेंघे ओर भारी-भारी गहने चुरानों।” बे घुस गए, घर में चोरी करबे। चोर मेंघो सामान ढूँढ-ढूँढके गठरियों में बाँधन लगे। लल्लू हे घर के एक कोने में चकिया को एक पाट मिल गओ, बाने उठाके देखो बो भोत भारी थो। लल्लू खुस हो गओ, बाने सोची भोतई अछओ सामान मिलो हे। बो चकिया के पाट हे कन्धा पे धरके गाँओं के बाहर चबूतरा पे घर आओ। ओर बापस आके चोरों से खुसी-खुसी बोलो, “मेंने बहुतई भारी सामान चुराओ हे। झल्दी चलो तुम लोगो हे दिखा दऊँ।” चोरों ने समझी लल्लू के हाथ तिजोरी लग गई हे। बिनने सारी गठरिएँ उतई पटकई ओर लल्लू के साथ भगत-भगत चबूतरे पे पोंहचे। उते बिनने तिजोरी की जगह चकिया को पाट देखो तो बिन्हें भोतई गुस्सा आओ। बे मिलके लल्लू हे मारन लगे। बोले, “अछओ मूरख हे तू?” लल्लू चिल्ला-चिल्लाके कहन लगो, “मूरख हुआओ तुम लोग, तुमने जैसी कई बेंसई मेंने भारी सामान उठाओ हे। ओर बोलन लगो, “में तुमरी सिकायत राजा साब से कर देहूँ।” चोर फिर डर गए, हाथ जोड़के बोले, “तेरे हल्ला में गाँओं बारे जग जेहें, अब चुपचाप इते से भग लेमें। बइमें तेरी ओर हमरी भलाई हे।”



कुछ दिना बाद चोर एक घर में चोरी करबे पोंहचे। घर में घुसबे के पहले लल्लू ने बिनसे कई, “अभई बता दो कोन सो सामान चोरी करनो हे?” चोरों को सरदार बोलो, “कोई भी सामान चोरी करबे के पहले ठीक से ठोंक-बजाके देख लेनो।” बाको मतलब थो सामान हे देख-परखके चोरी करनो। बे घुस गए घर में चोरी करबे। चोरों हे तिजोरी मिल गई, बे बाहे खोलई ए थे। इत्ते में लल्लू के हाथ में दिबाल पे टँगी कोई चीज आ गई। बाने सोची जाहे चुराबे के पहले ठोंक बजाके देख लऊँ। बा थी ढोलकी। जेंसई लल्लू ठोंकन लगो, बाको ऐरो सुनके घर बारे जग गए। सब चिल्लान लगे, “पकड़ो-पकड़ो भड़ियो हे पकड़ो!”



सबरे चोर अपनी जान बचाके आगुड़-बागुड़ कूद फाँदके भागे। अपनी मिलबे की जगह पोंहचे तो कोई के उन्नहा फट गए थे, कोई खबना में खब गओ थो, कोई के पाँओं में काँटे गड़ गए थे। सबरे मिलके लल्लू हे ताओ बतान लगे। लल्लू ने कई, “एक तो में सरदार को बताओ काम कर रओ हूँ ओर ऊपर से तुम लोग मोहे आँख बता रओ हो ? में अमई जाके राजा से सिकायत करत हूँ।” चोरों ने कान पकड़े, बोले, “माफ करो मूरख राज।” बिनने आपस में सूद सला करके कई, “लल्लू भाई अब हम जिते भी चोरी करबे जाहें, उते तुम्हें कछु भी चोरी करबे की जरूरत नईहौ। बस तुम साथ रहियो।”

अबकी बेरा रात में, बे एक डुकरिया के घर चोरी करबे घुसे। चोर मालमत्ता ढूँढन लगे। लल्लू ने देखो चुल्हे पे खीर चुड़ रई हे ओर उतई दिवाल से टिकके डुकरिया सो रई हे। असल में खीर बनात-बनात डुकरिया ऊँघन लगी थी। लल्लू थरिया में खीर लेके खान लगे, बीच बीच में डुकरिया हे भी देखत जाए, काय से डुकरिया जग न जाए। इते में डुकरिया हे जम्भाई आई। बा नींद मेंई एक हाथ मों के पास ले गई। लल्लू हे लगे डुकरिया इसारे से कह रई हे, “मेरे मों में खीर डार दे।” लल्लू ने आओ देखो न ताओ एक करेछली गरम खीर डुकरिया के मों में डार दई। डुकरिया को मों बर गओ। बा जोर-जोर से चिल्लान लगी। बाको हल्ला सुनके गाँओं बारे आ गए। चारई चोर घर के चार कोनों में लुक गए। लल्लू ऊपर पटमा पे लुक गओ। गाँओं बारों ने डुकरिया से पूछी, “तेरे मों में गरम खीर कोन ने डार दई ?” डुकरिया बोली, “मोहे कछु नई मालुम भइया। ऊपर बारो जाने... ? मेरो तो मों बर गओ, आग लगे ऊपर बारे में।”

लल्लू ने सोची डुकरिया मेरिई-मेरिई कह रई हे। बासे सहन नई भई। बो बोल उठो, “जब से मेरिई-मेरिई कह रई हे डुकरिया ! जे चारई कोने में लुके हैं इनकी कछु नई कह रई।” गाँओं बारों ने पटमा पे से लल्लू हे ओर चारई कोनों में से चारई चोरों हे पकड़ लाए ओर खूब पिटाई लगाई।



6 जादुई संख



गाँओं में एक साधु रहत थे। बिनकी कुटिया गाँओं से बाहर नदी के किनारे थी। एक आदमी बिनको चेला थो। बो रोज साधु की सेवा करबे जात थो। बो दिन ऊगे चलो जाए। कुटिया में बुहारी लगाए, पानी भर आए। साधु के लाने रोटी बना दे। ऐसो करत-करत भोत समय बीत गओ। साधु बूढ़ो हो गओ ओर बीमार रहन लगो। एक दिना साधु हे लगो बाको आखिरी समय आ गओ हे। बाने अपने चेला हे बुलाके कई, “बेटा तूने मेरी भोत सेवा करी हे, कछु दुख नई होन दए। में तोहे कछु देनो चाहत हूँ।” साधु ने अपने सिरहाने के नीचे से एक संख निकारके चेला हे दओ। बोलो, “जो जादुई संख हे, तोहे मुसीबत में भोत काम आहे। जब भी तू संख से कछु माँगहे बो तोहे देहे। हाँ एक बात जरूर हुए। तू जो भी माँगहे बासे दूनो तेरे पड़ोसी हे सुझ मिल जेहे।” साधु ने चेला हे संख को उपयोग करबे को बिधि-बिधान बताओ।

बोलो, “आधी रात में घर के बाहर आँगन में निकरके संख फूँकबे से तेरी इच्छा पूरी हो जेहे। कमऊँ भी दूसरे को बुरो करबे की मत सोचिए, नई तो तेरो अनष्ट हो जेहे।” थोड़ी देर बाद साधु मर गओ। चेला ने गाँओं बारों हे बुलाके बाको किरिया-करम कर दओ।



रात में चेला लुकाके संख अपने साथ घर ले आओ ओर बाहे म्यार पे रख दओ। जा बात बाने अपनी घरबारी हे भी नई बताई। बाके मन में सोचा-बिचारी चलन लगी, संख से का माँगू ? धन-दोलत, हाथी-घोड़ा, महल-अटारी। पर जा बिचारके की, में जो भी माँगहूँ बासे दूनो पड़ोसी हे मुफ्त में मिल जेहे, बो चिमा जाए। ऐसो करत-करत भोत दिना हो गए।

एक दिन बाको अपने गोई के साथ द्वारिकापुरी तीरथ जाबे को बिचार बन गओ। एकाएक बिचार बनो थो जाके मारे बो घर में खाबे-पीबे के सामान की जुगाड़ नई कर पाओ। जाबे की बेरा तुरतई बाहे जादुई संख को ध्यान आओ। बाने सोची बन गओ काम। घरबारी हे संख के बारे में बता देहूँ बा अपने खाबे-पीबे को इन्तजाम कर लेहे। बाने पत्नी हे जादुई संख के बारे में सब कछु समझा दओ। बोलो, “सिरफ खाबे-पीबे को सामान माँगियो, मेंघो सामान मत माँगियो। काय से हमसे जादा फायदा हमरे पड़ोसी को हो जेहे।” बो बोलो, “अच्छो रोबो हे, मोहे इत्ते दिनों की सेवा-टहल के बाद संख मिलो हे, ओर फायदा हुहे पड़ोसी को, बो भी दूनो। में बाको फायदा नई होन दऊँ, जई सोच के मेंने अबे तक संख नई बजाओ।”

चेला ओर बाको गोई निकर गए तीरथ यात्रा पे। इत्ते चेला की घरबारी हे चेन नई पड़े। बा सोचे कब आधी रात



होय ओर में संख को जादू देखूँ। आधी रात तक बा भूँकी बेठी रई। आधी रात होतई आँगन में निकरके बाने जा सोचके संख फूँको की सोने की थारी में खीर पुड़ी, पकवान खाबे मिल जाएँ। तुरतई सोने की थारी प्रकट भई। बाने जी भरके खाना खाओ। खाना खाबे के बाद बाने सोची, मेरे गारे में हीरों को हार आ जाए। संख बजातेई बाकी इच्छा पूरी हो गई। हीरों की धिलक में बाने अपने टूटे-फूटे घर हे देखके सोची, जाकी जिग्गहा महल बन जातो तो मजई आ जातो। संख फूँकतेई से महल बन गओ। साथ मेंई पड़ोसी के घर की जिग्गहा बैसेई दो महल बन गए। चेला की घरबारी ने अपने महल के छज्जा से पड़ोसन हे देखो। बाके गारे में हीरों के दो-दो हार थे। बाके मोड़ा-मोड़ी सोने की थारियों में खाना खा रए थे। जा देखके बा जलभुँज गई। रात भर बाहे नींद नई आई। सोचन लगी तीरथ यात्रा से बाके घरबारे लोट हें तो बे कछु कर हें। बाने संख हे लुकाके रख दओ।

महीना भर बाद बाको घरबारो तीरथ यात्रा से लोटो, तो बाने बाहे सब बातें बताई। घरबारो घरबारी से जादा सुआरथी निकरो। बो पहले तो घरबारी पे खूब चिल्लाओ, “मेंने पहलेई कई थी संख से मेंघो सामान मत माँगियो, तुमने पड़ोसी के दो-दो महल बनबा दए?” अब में कछु जुगाड़ लगात हूँ ताकी पड़ोसी को भलो ने होय।

बो लग गओ सोचा-बिचारी में। आधी रात को बाने जा सोचके संख फूँक दओ की मेरी एक आँख फूट जाए, बासे पड़ोसी की दोई आँखें फूट जेहें। बाकी एक आँख फूट गई पर भाग से, बा दिना पड़ोसी अपनी सुसरार गओ थो। जा से बाकी आँखें फूटबे से बच गई। दूसरी बार बाने अपनी एक टाँग टूट जाए सोचके संख बजा दओ। पड़ोसी तो बच गओ पर बाकी एक टाँग टूट गई। टाँग टूटी तो दरद के मारे बो चीखन-चिल्लान लगो। फिर भी बाने जा सोचके तीसरी बार संख फूँक दओ की मेरे महल के सामने एक कुआ खुद जाए, बाके पड़ोसी के महलों के सामने दो-दो कुआ खुद गए। घरबारे ने सोची में दरद के मारे इतो चीख-चिल्ला रओ हूँ पर पड़ोसी को ऐरो नई आ रओ का बात हे? दोइयों ने सोची महल के बाहर निकरके देखिएँ की पड़ोसी को का भओ! उलात में बे भूल गए की उनके महल के सामने भी कुआ खुदो हे। बे दोई कुआ में गिर गए ओर मर गए।



पत्ता भर भत्ता



गाँओं में दो भइया रहत थे। बड़े को नाम कुन्दन, छोटे को नाम नन्दन थो। बे मोतई गरीब हते। बे गाँओं में मेहनत मजूरी करके अपनो पेट भरत थे। एक दिना कुन्दन ने नन्दन से कई, “भइया जा गाँओं में, दिनों-दिन हमरी भूँको मरबे की नोबत आ रई हे। में कल्लई दूसरे गाँओं काम दूँढबे जाहूँ।”



दूसरे दिना कुन्दन जोरे के गाँओं में जाके जोर-जोर से चिल्लाके कहन लगो, “मोहे कोई काम से लगा लो... भइया कोई काम से लगा लो...” बाको ऐरो सुनके गाँओं पटेल ने बाहे बुला लओ। पटेल ने बासे पूछी, “का नाम हे तेरो, काँ से आ रओ हे ओर का काम करहे?” कुन्दन ने अपनो नाम-पतो सब बता दओ ओर कई, “जो कछु भी काम बताहो बो में करहूँ।” अब पटेल ने कई, “साल भर काम करबे के बाद, पाँच सौ रुपैया मजूरी के देहूँ ओर हर दिन खाबे के लाने पत्ता भर भात मिलेगो। पर एक सरत हे, अगर

तूने अपने मन से साल भर के भीतर काम छोड़ो, तो तेरे नाक-कान काट लेहूँ ओर मजूरी भी न देहूँ। ओर अदि में तोहे झाँ से भगाऊँ, तो तू मेरे नाक-कान काट लइए ओर बदले में मोसे हजार रुपैया लइए।” कुन्दन ने लालच के मारे बिना सोचे समझे पटेल की सरत मान लई।

अब बो दिन भर काम करे ओर दिन डूबे पटेल के बगीचा में से कभी आम को पत्ता तो कभी बिही को पत्ता तोड़ के ले जाए। पटेल के घर से बाहे पत्ता भरके भात मिल जाए। छोटे-छोटे पत्ता पे जरा सो भात बने, जाके मारे बो भूँको मरन लगो। जैसे-तैसे कछु दिन बाने काम करो। जब भूँक सहन नहीं भई तो बाने पटेल से कई, “पटेल साब में जा रओ हूँ।” पटेल ने बाहे सरत याद दिलाई। कुन्दन बोली, “पटेल साब पेट कटबे से अच्छो हे अपने नाक-कान कटा लऊँ।” पटेल ने बाके नाक-कान काट लाए।

कुन्दन रीत-रीत बापस अपने घर पौहचो। नन्दन ने पूछी, “काय भइया तोरे नाक-कान कोन ने काट लाए?” कुन्दन ने पूरी कहानी सुनाई। नन्दन हे आओ गुस्सा, बाने कई, “भइया जेने तेरे नाक-कान काटे हैं, में बाके सुड़ नाक-कान काटके लाहूँ।”

दूसरे दिना नन्दन बई गाँओं पोहोचके, गली-गली चिल्लान लगो, “काम लगा लो... कोई मोहे काम लगा लो...” पटेल ने आबाज सुनी तो खुस हो गओ की एक ओर मुरगा फँसो। पटेल ने बाहे बुलाओ ओर अपनी सरत बताई। नन्दन ने बाकी सब बातें तुरतई मान लई।



दूसरे दिना पटेल के खेत में काम करबे के बाद, दिन डूबे नन्दन पटेल के घर केरा को पत्ता लेके पोहोच गओ। पटेल हे बाहे केरा के पत्ता भर भात देनो पड़ो। नन्दन की पहचान एक बगीचा बारे से थी, बो बासे रोज एक केरा को पत्ता लिआए। पटेल से भात लेके खुद जी भर के खाए ओर बचो भात बगीचा बारे गोई के लाने ले जाए। बो भी खाके खुस हो जाए।

एक दिना का भओ, पटेल के इते मिजबान आए। पटेल ने नन्दन हे बुलाओ ओर कई, “तू झल्दी चाय बनाके ला।” नन्दन ने कई, “कैसे बनाऊँगो?” पटेल ने कई, “अरे मूरख! घर में आगी बारके बना लइए।”

नन्दन घर गओ ओर बाने घर में आगी लगा दई। देखत-देखत पूरो घर बर गओ। गाँओं भर में हल्ला मच

गओ की पटेल के घर में आगी लग गई हे। सबरे दोड़े। उनने आगी बुझाई। पटेल ने नन्दन हे खूब डाँटो। नन्दन ने कई, “तुमनेई तो कई थी घर में आगी बारके चाय बना लइयो।”

पटेल को घर तो बर गओ। पर पटेल नन्दन हे भगा भी नई सके, नई तो बो पटेल के नाक-कान काट लेहे। ऊपर से हजार रुपैया धरबा लेहे। पटेल ने सोचीं जो मोहे बरबाद करके छोड़ हे, जासे केसे पिण्ड छुड़ाऊँ ? रात में बाने पटेलन से कई, “अपन दोई चुपचाप कछु दिना के लाने तेरे मायके चले चलत हैं। तब तक जो नन्दन हेरान होके काम छोड़के भग लेहे। रस्तो लम्बो हे खाबे-पीबे, ओढ़बे-बिछाबे को सामान पेटी में रख लइयो।” जा बात नन्दन ने सुन लई। रात में बो पेटी में चुपके से घुसके बठ गओ।

पटेल ने आधी रात में पेटी मूढ़ पे धरी ओर पटेलन हे संग लेके निकर गओ। गेल में बाने पटेलन से कई, “पेटी तो भोतई गरई लग रई हे। जामे का धरो हे ?” पटेलन ने कई, “कछु नई थोड़ो सो खाबे-पीबे को सामान हे।” नन्दन ने पेटी में बठे-बठे खीर-पुड़ी, साग-सब्जी सब खा लई।

पटेल पेटी धरे-धरे बिट्टया गओ तो बाने एक जिग्गहा सुस्ताबे काजे पेटी उतारी। बाहे खोली तो बामे से नन्दन निकरो। पटेल बाहे देखके मनई-मन भोत गुस्सा भओ पर बासे कछु बोलो नई। पटेल ने पटेलन से कई, “अपन झई रुकहें।” पटेलन ने कई, “अपन सोहें कौ ?” पटेल ने कई, “जा कुआ की पाट पे सो जेहें।”

तीनई कुआ की पाट पे सो गए। नन्दन समझ गओ थो, जामे कछु पटेल को कपट हे। बाने धीरे से उठके अपनी चद्दर पटेलन हे उड़ा दई ओर बाकी चद्दर खुद ओड़के सो गओ। सकारे उठके पटेल ने नन्दन के धोके में पटेलन हे कुआ में धका दई। पटेलन बचाओ-बचाओ चिल्लाई तो पटेल घबरा गओ। नन्दन भी जग गओ। पटेल ने बासे कई, “में तुमरे हाथ पाओं जोड़त हूँ, पटेलन हे कुआ में से निकार दे ओर बाके बदले में चाहे तो तू मेरे नाक-कान काट लइए।” बो रोन-गान लगो।

नन्दन रस्सी बाँधके कुआ में कूदो ओर पटेलन हे कुआ में से निकार लाओ। पटेल पानी-पानी हो गओ। नन्दन से बोलो, “भइया तू मेरे नाक-कान काट ले, हजार रुपैया ले ले ओर मोहे माफी दे दे।” नन्दन ने कई, “पटेल साब तुमरे नाक-कान काटबे की जरूरत नईहैं। तुमने अपनी करनी की सजा भोग लई हे। अब आगे से कोई को बुरो मत चेतियो, नई तो तुमरो ओर भी बुरो हुए।” पटेल ने सों खा लई।

गाँओं लोटके पटेल ने नन्दन, कुन्दन दोई भाइयों हे काम पे लगा लए।

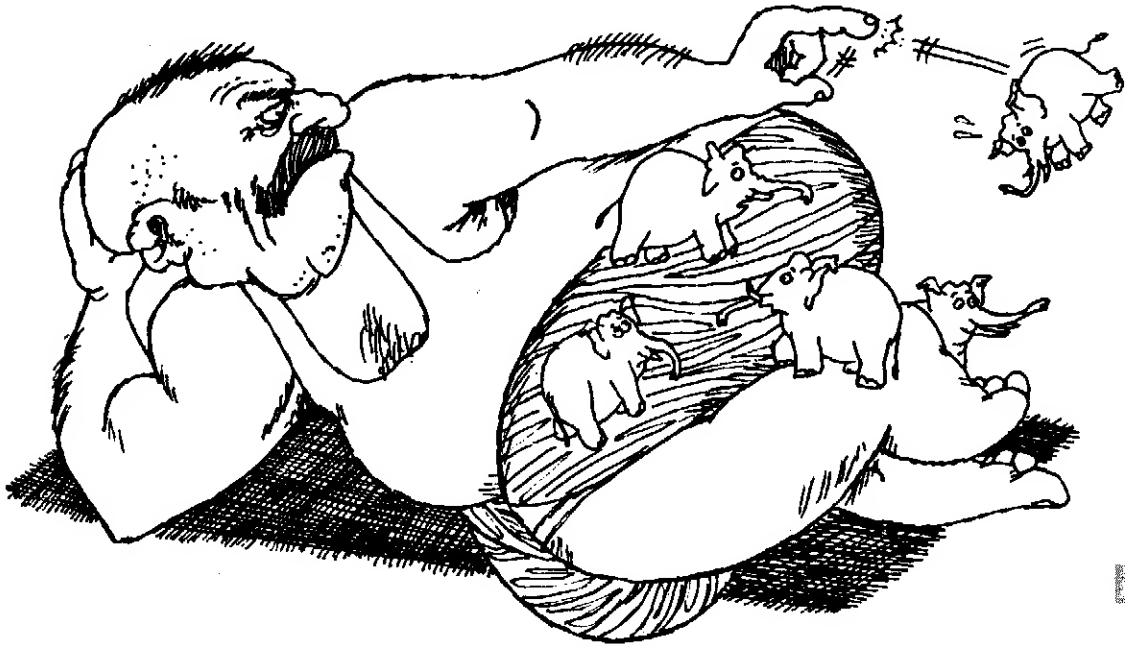


दिल्ली की गप्प



थो दिल्ली को पहलवान, बाहे अपनी ताकत पे भोत गुमान थो। बाने भोतसे दंगल जीते थे। दिल्ली के असफेर कोई पहलवान नई बचो थो, जो बासे कुस्ती लड़े। एक दिना बाहे पता चलो आगरा में एक पहलवान हे, बो भोतई बलवान हे पर बो कुस्ती लड़बे बाहर नई जात थो। तो दिल्ली के पहलवान ने सोची में खुद जाके आगरा के पहलवान से कुस्ती लड़हूँ। बाने अपनी घरबारी से कई, में कुस्ती लड़बे परदेस जा रओ हूँ। रस्ता में खाबे के लाने एक बड़ी सी चद्दरा में सत्तू बाँधके धर दइयो।” बाकी घरबारी ने सोची परदेस की बात हे, उते खाबे को सुभीता होय न होय। जासे बाने दो चद्दरों में सत्तू की दो पुटरिँ बाँध दई।

पहलवान ने दोई पुटरिँ कन्धों पे धरीं ओर चल दओ। चलत-चलत बाहे गेल में जोर की भूँक लग आई, तो बाने एक तला के किनारे जाके दोई पुटरिँ खोल लई ओर बो हाथ धोबे तला में गओ। इत्ते में बड़े जोर को अन्धूड़ा चलो ओर पूरो को पूरो सत्तू उड़के तला में घुर गओ। पहलवान ने सोची जो अच्छो भओ सत्तू घोरबे कीं मुसीबत से बचो। बाने सत्तू भरो पूरो तला पी गओ। पीबे के बाद बाहे आलस आओ। बो भई पसरके सो गओ। बई तला को पानी जंगली हथ्थी पियत थे। हथ्थी जब पानी पीबे आए तो तला खाली डरो थो ओर उतई पहलवान सो रओ थो। प्यासे हथ्थी गुस्सा में आके पहलवान हे कुचलन लगे। पहलवान हे नींद में लगो बाके ऊपर कीड़ा चल रए हें। बो बिन्हें उठा-उठाके फेंकन लगो, बे हाथी दूसरे पहलवान के आँगन मे जाके गिरन लगे। जब पहलवान की नींद पूरी हो गई तो बो दूसरे पहलवान के घर चल दओ।





बाने पहलबान के घर पोहोचके देखो, एक छोटी मोड़ी हथियों हे झड़ा-झड़ाके आँगन के बाहर फेंक रई हे। पहलबान ने मोड़ी से पूछी, “काय मोड़ी तेरो बाप काँ हे।” मोड़ी ने कई, “बब्बा तो सो गाड़ी बाँध के, जंगल लकड़ी लाबे गओ हे।” पहलबान ने सोची जो अच्छो मोका हे, जंगल में जाकेई कुस्ती लड़ हूँ। बो चल दओ जंगल।

बई रस्ता से दूसरो पहलबान लकड़ी लदी गाड़िँ खेंच के ला रओ थो। पहलबान एक खोह में छुप गओ ओर आखिरी गाड़ी के पहिया दोई हाथ से पकड़के थाम दए। दूसरे पहलबान से गाड़ी नई खिची तो बाने पीछे आके देखो ओर पहलबान से कई, “काय भाई का बात हे?” पहलबान बोलो “में तोसे कुस्ती लड़बे दिल्ली से रिंगके आ रओ हूँ।” दूसरो पहलबान भी कुस्ती लड़बे तइयार हो गओ।

पर एक बाधा आन खड़ी भई। हार-जीत को फेसला कोन करहे? इते में गेल से एक डुकरिया आत दिखी। बा अपने मोड़ा के लाने खेत में रोटी देबे जा रई थी। पहलबानों ने बासे अपनी बात कई। डुकरिया बोली, “में तुमरी कुस्ती को फेसला कर तो देती पर मोहे अभहे बड़ी उलात हे। मेरो मोड़ा खेत में भूँको हुए, बाहे रोटी देबे जा रई हूँ। जासे में तुमरी कुस्ती देखबे रुक नई सकूँ।” जा सुनके पहलबान दुखी हो गए। डुकरिया बिन्हें दुखी देखके बोली, “ऐसो करो तुम दोई जनें मेरी हथेली पे कुस्ती लड़त चलो। में चलत जेहूँ ओर तुमरी कुस्ती भी देखत जेहूँ।”

दोई पहलबान बाकी बात मान गए ओर डुकरिया की हथेली पे कुस्ती लड़न लगे। डुकरिया सो कदम धरके, सो कोस दूर अपने खेत में पोहोच गई। उते बाको मोड़ा कुदाली से झल्दी-झल्दी खेत खोद रओ थो। बासे खूब धूरा उड़ रई थी। डुकरिया खेत की मेड़ पे पोंहची तो बाकी नाक में धूरा घुस गई। बाहे बड़ी जोर से छींक आई। बा इती जोर से छींकी का दोई पहलबान बाकी हथेली से उड़ गए। एक गिरो दिल्ली में तो दूसरो जाके गिरो आगरा में। दोई की हड्डी-पसलियाँ टूट गई। बिनको घमण्ड भी चूर-चूर हो गओ।



चिड़ा-चिड़ी



के पेड़ पर चिड़ा-चिड़ी रहत थे। एक दिना कहीं से, चिड़ा लाओ दाल को दाना, चिड़ी लाई चाबल को दाना। दोई ने मिलके हड़िया में खिचड़ी पकाई। चिड़ी, चिड़ा से बोली, “में नद्दी जा रई हूँ। लोट के आ जाऊँ, फिर दोई खिचड़ी खाहें।”

नद्दी में मिल गई चिड़ी की पुरानी गोई, दोई बड़ी देर तक बतियात रई। इते भूँको चिड़ा चिड़ी की रस्ता देख रओ थो। बड़ी देर हो गई। जब भूँक बस की नई रई तो चिड़ा ने सोची थोड़ी-सी खिचड़ी चखके देख लऊँ। खिचड़ी चखी तो बाहे भोत अच्छी लगी। बाने सबरी खिचड़ी खा लई।

थोड़ी देर बाद चिड़ी नद्दी से सपरके आ गई। बाने खाली हड़िया देखी तो भोत गुस्सा भई। बाने चिड़ा से कई, “अब में तुमरे साथ एक मिनट नई रऊँ, में मायके जा रई हूँ।” चिड़ा बाहे मनात रहो, मनो बाने बाकी एक नई सुनी। चिड़ी फुर्रर से उड़के अपने मायके चली।

जैसई बा नद्दी के ऊपर पोंहची एक कानो कौआ काँओं-काँओं करके बोलो, “चिड़ी-चिड़ी काँ चली?” चिड़ी बोली, “मायके।” कौआ बोलो, “काय?” चिड़ी बोली, “चिड़ा ने मोहे भूँको रखो, अकेले पूरी खिचड़ी खाई।” कौआ बोलो, “चिड़ी रानी मायके मत जा मेरे घर रह जा।” चिड़ी बोली, “तुम काँ रहत हो, का खात हो?” कौआ बोलो, “पेड़ पे रहत हूँ ओर नीम की निबौरी खात हूँ।” चिड़ी बोली, “मोहे नई खानो कड़बी-कड़बी निबौरी, नई रहनो तेरे संग।”

बा उड़ चली। उड़त-उड़त बाहे मिट्टू मिलो। मिट्टू बोलो, “चिड़ी-चिड़ी काँ चली?” चिड़ी बोली, “मायके।” मिट्टू बोलो, “काय?” चिड़ी बोली, “चिड़ा ने मोहे भूँको रखो, अकेले पूरी खिचड़ी खाई।” मिट्टू बोलो, “मेरे पास रह जाओ।” चिड़ी बोली, “तुम काँ रहत हो, का खात हो?” मिट्टू बोलो, “पेड़ की पोल में रहत हूँ ओर मिरची खात हूँ।” चिड़ी बोली, “मोहे नई खानो चिरपरी मिरची, नई रहनो तेरे संग। बड़ो आओ मिरची बारो।”



बा झल्टी-झल्टी उड़ चली। जब बा अपने गाँओं पोंहची तो गाँओं के बाहरई बूँचो कुत्ता मिल गओ। कुत्ता बोलो, चिड़ी-चिड़ी काँ चली?" चिड़ी बोली, "मायके।" कुत्ता बोलो, "काय?" चिड़ी बोली, "चिड़ा ने मोहे भूँको रखो, अकेले पूरी खिचड़ी खाई।" कुत्ता बोलो, "चिड़ी तू मेरे साथ रह जा तोहे खूब अच्छे से रखूँगा।" चिड़ी बोली, "तू रहत काँ हे, खात का हे?" कुत्ता बोलो, "पटेल के घर में रहत हूँ ओर गुड़-फुटाने खात हूँ।" गुड़-फुटाने को सुनके चिड़ी के माँ में पानी आ गओ। बोली, "में तुमरे संग रह जाऊँगी पर पहले गुड़-फुटाने खिला।"

कुत्ता बाहे एक साहूकार की दुकान पे ले गओ। साहूकार कोई काम से घर के भीतर गओ थो। कुत्ता झल्टी-झल्टी गुड़-फुटाने खान लगे, चिड़ी भी बाके संग चुगन लगी।

इते में साहूकार आ गओ। चिड़ी तो फुर्र से उड़ गई। बाने डण्डा से कुत्ता हे खूब मारो। कुत्ता लंगड़ात-लंगड़ात भगो तो पेड़ पे बेठी चिड़ी बासे बोली, "नीम की निबौरी खाबे बारो कौओ छोड़ो, मिरची खाबे बारो मिट्टू छोड़ो, भले मिले तुम बूँचे कुत्ते, खूब खिलाए तुमने गुड़ फूटे।"

चिड़ी ने सोची, "सबसे अच्छे बईको चिड़ा हे जो दाल खिलात हे।"

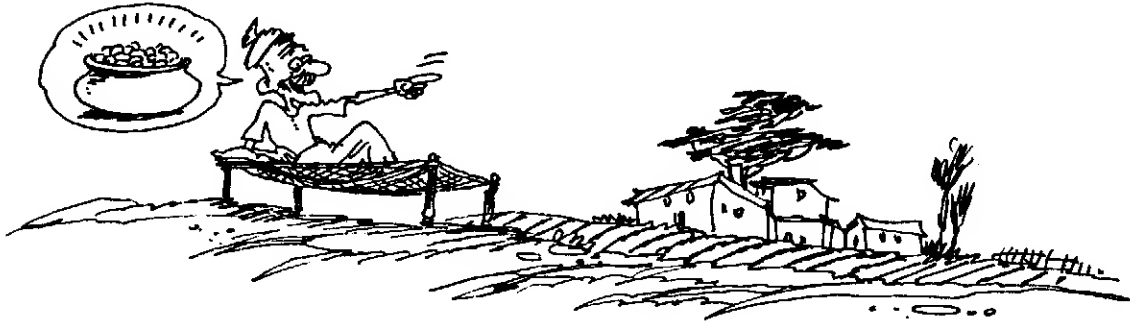


मेहनत को फल



गाँवों में एक किसान रहत थो। बाके तीन मोड़ा हते, तीनई भोट अलाल थे। भओ का थो, छुटपन मेई मोड़ों की मेहतारी मर गई थी। जासे किसान उनसे भोट प्रेम करत थो। बाने मोड़ों हे खूब आराम दओ थो जासे मोड़ा हुन अलाल हो गए थे। बिनको छुटपन तो जेंसे-तेंसे कट गओ, पर जब बे बड़े हो गए तो किसान हे फिकर होन लगी की मेरे मरबे के बाद कैसे इनको जीवन चलहे ? इनने खेती बाड़ी करबो सीखी नईहे। जेई रंग-ढंग रहे तो जे बरबाद हो जेहें। किसान सोचन लगो मोड़ों हे कैसे सही गेल पे लाऊँ ? का उपाय करूँ जासे जे मोड़ा सुधर जाएँ ? बाके दिमाक में एक उपाओ आओ।

एक दिना भुनसारे किसान गेरहोस होके धरती पे गिर गओ ओर तड़फड़ान लगो। तीनई मोड़ा घबराके दोड़े। बिनने पिताजी हे बिछोना पे लिटाओ ओर पूछी, “का हो गओ पिताजी ?” पिताजी बोले, “मेरी छाती में भोट कसके दरद हो रओ हे, लगत हे अब में नई बचूँ। बस तुमरी फिकर में मेरी जान अटकी हे। अदि तुम लोग खेती बाड़ी करके कछु कमा-धमा रए होते तो में सुख से मर तो सकत थो। न तुमने मेहनत करबो सीखी न तुम धेला कमा सको।” तीनई मोड़ा रोट-रोत बोले, “पेले तुम ठीक हो जाओ पिताजी हम मेहनत करबे तइयार हैं।”



किसान बोलो, “मोहे अपने दादा की एक बात याद आ रई हे। बिनने मरत समय मेरे कान में कई थी। बिनने कई थी, “अपने जामुन बारे खेत में तीन हण्डा गड़े हैं, बिनमें भोट धन-सम्पत्ति हे। तुम लोग अदि खेत खोदके बे हण्डा निकार लो, तो तुम्हें जीवन भर मेहनत मजूरी करबे की जरूरत नई पड़हे।” मोड़ों ने पूछी। “पिताजी बे हण्डा खेत में से कैसे निकारें ?” किसान बोलो, “तुम लोग कल उठ भुनसारे कुदाली लेके खेत में जइओ ओर सबरो खेत खोदियो। काहे से हण्डा काँ गड़े हैं जा मोहे नई मालुम।”

दूसरे दिना उठ भुनसारे तीनई भाई, कुदाली लेके जामुन बारे खेत में गए। दिन भर बिनने खेत खोदो, एक बिता धरती नई छोड़ी। पूरो खेत खोद डारो लेकिन हण्डा नई निकरे। दिन डूबे हारे-थके घर लोटे। बिनने पिताजी से

कई, “हमने पूरा खेत खोद डारो, लेकिन हण्डा नहीं निकरे।” पिताजी बोले, “लगत हे हण्डा जमीन में गहरे गड़े हैं? ऐसो करियो कल तुम लोग बक्खर ले जइयो, पूरा खेत बखरियो। हो सकत हे बक्खर में उरझके हण्डा जमीन के ऊपर आ जाहें।” पिताजी ने जैसी कई थी मोड़ों ने बेंसई करो - खेत हे बखरो, पर बिन्हें हण्डा नहीं मिले। निरास घर लोटे। पिताजी ने बिनसे कई, “कोई बात नहीं बेटाहरों, इती मेहनत करी हे तो तुम लोगों हे हण्डा जरूर मिलहें। ऐसो करियो खेत में हल ले जइयो, हल जमीन में गहरो जाहे। बा में उरझके हण्डा ऊपर आ जाहें। अब इती मेहनत करहो तो एक काम ओर करियो, बई में चना की बोनी कर दइओ।” मोड़ों ने ऐसई करो लेकिन बिन्हें हण्डा नहीं मिले। बिनने पिताजी से कई। पिता ने बिनकी आस बँधाई, कई, “तुम लोग चिंता-फिकर मत करो। हो सकत हे जब फसल कट हे, तब हण्डा निकर आएँ खेत में से।”

बिनके खेत में चना की खूब फसल भई। पिताजी ने मोड़ों हे मण्डी में भेजके चना बिकबा दए। मोड़ाहुन खूब सारे रुपया-पईसा लेके मण्डी से लोटे। किसान ने बे पईसा तीन हण्डों में भर दए ओर मोड़ों से कई, “जे रहे तुमरे धन-दोलत से भरे हण्डा! का अभहे भी तुम्हें खेत में गड़े हण्डों की जरूरत लग रई हे?” तीनई मोड़ा बोले, “हम समझ गए हैं पिताजी, अदि हम खेती में मेहनत करहें तो हर साल धन-दोलत से भरे ऐसो कई हण्डा कमा लेहें।”



पण्डा पहलबान



किनारे गाँओं थो किसनपुर। जा गाँओं के लोग राधाकिसनजी के मोत भक्त थे। बिनने गाँओं में राधाकिसन को मन्दिर बनबाओ। मन्दिर बन गओ तो पूजा के लाने पुजारी की जरूरत पड़ी। संजोग से एक गरीब बाग्हन को मोड़ा, जो कासी से पढ़के निकरो थो, गाँओं पोंहचो। गाँओं बारों ने बाहे मन्दिर को पुजारी बना दओ।

बो रोज पूजा करे, गाँओं से हर रोज एक से एक भोग भगवान के लाने आएँ। पुजारी बढ़िया ठाकुर जी हे भोग लगाए। भगवान तो भाओ के भूँके हैं, बे तो खात नई। सब कछु पुजारीजी ही खाएँ। बढ़िया दूध-दही, खीर-पूड़ी, हलुआ, मालपुआ ओर न जाने का का ? पुजारीजी जब झाँ आए थे तो दुबरे-पतरे थे, अब बे खा-खाके मुटा गए। एक बार गाँओं के मुखिया ने पुजारीजी हे देखके कई, “अब हमरे पुजारीजी बड़े हट्टे-कट्टे दिख रए हैं, पण्डा पहलबान के घाई। जब से पुजारीजी की गाँओं भर में पण्डा पहलबान छाप पड़ गई।”

एक बार नागपंचमी के दिना दूसरे गाँओं को एक पहलबान अपनी घोंस जमाबे किसनपुर आओ। बा समय गाँओं बारों की चोपाल पे बैठक लगी थी। जा पहलबान ने आओ देखो न ताओ चोपाल पे जाके मुट्ठे ठोकन लगो ओर कहन लगो, “जा गाँओं में अदि कोई बीर हो तो आके मोसे कुस्ती लड़े।” जा सुनके सब लोग सकपका गए, जो काँ को खूँतो आ गओ। का करें का नई करें लोग सोचन लगो। इते में फिर बाने चिल्लाके कई, “अदि कोई बीर हो तो मोसे कुस्ती लड़े, नई तो गाँओं भर के लोग एक-एक करके मेरी दोई टाँगों के बीच में से निकरें।” अब गाँओं भर के सामने जा बड़ी बेज्जती की बात थी। जा पहलबान को डीलडोल देखके गाँओं के कोई भी अदमी की हिम्मत बासे लड़बे की नई भई। इते में मुखिया ने गाँओं बारों से कई, “अब तो पण्डा पहलबानई हमें जा मुसीबत से बचा सकत हैं।” सब लोगो हे जा बात जम गई। मुखिया ने जा खतरनाक पहलबान से कई, “तुम झई रइओ हम तुमरी जोड़ के लाने जा रए हैं, अमई लात हैं पहलबान हे।” जा पहलबान ने कई, “देर मत करिओ झल्दी अइओ, नई तो गाँओं में तोड़-फोड़ सुरू कर देहूँ।”





मुखिया ओर गाँओं बारे चल दए मन्दिर। पण्डा पहलबान पूजा करके चबूतरा पे आराम कर रए थे। बिनने सबरे गाँओं बारों हे आत देखे, तो समझे कछु को न्योतो देबे आ रए हुए। बे भोत खुस भए। सोचन लगे अच्छे-अच्छे पकबान खाबे मिलहें। मुखिया ने आके पण्डा पहलबान से पालागी करी। पण्डा पहलबान ने पूछी, “का बात हे कुइ के झाँ ब्याओ हे, मिजबान आ रए हैं, बताओ तो का बात हे?” मुखिया ने कई, “गुरूजी बड़ी आफत आ गई हे, अदि गाँओं की इज्जत बच गई तो सब कुसल मंगल रह हे। दूसरे गाँओं को एक खतरनाक पहलबान आओ हे। बाने भरी चोपाल में ललकारो हे, “कोई मेरे से कुस्ती लड़ ले, नईतो सबकी इज्जत धूरा में मिला देहूँ।” पण्डा पहलबान ने कई, “बाने में का करूँ?” मुखिया ने कई, “गुरूजी हम तुमरे हाथ जोड़ रए हैं तुम जाके बासे कुस्ती लड़ो।” पण्डा पहलबान घबरा गओ। बाने कई, “जा तुमरे मन्दिर के हाथ जोड़े, में तो मेरे गाँओं चलो। मोहे झाँ रुकनेई नईहाँ।” गाँओं के बड़े-बूढ़ों ने कई, “पण्डा पहलबान तुम्हें चोपाल तक तो चलनो पड़हे।” मुखिया ने कई, “गुरूजी भलेई बा पहलबान से हाथ मिलाके भग लड़यो। काय से जो गाँओं की इज्जत को सबाल हे।” पण्डा पहलबान तैयार हो गओ।

गाँओं बारों के संग बे चोपाल पोंहचे। भाँ पहलबान की मालिस हो रई थी, कारो-कलटो पहाड़ के घाँई काया। पण्डा पहलबान की तो देखके चुटिया कैप गई। मुखिया ने दूसरे पहलबान से जाके कई, “हमरे गाँओं के पहलबान ने तो तोहे लड़बे लाक नई समझो। बिनने अपने चेला पण्डा पहलबान हे लड़बे भेजो हे। जो भोतई गुस्सेल हे। जो काम अपने गुरूजी से करबे की बोल देत हे, करकेई मानत हे।” सबरे गाँओं बारे मिलके पण्डा पहलबान की मालिस करन लगे। गुदगुदी लगे तो पण्डा पहलबान भगबे के काजे जोर लगाए, जासे कोई गाँओं बारो इते पड़े कोई उते पड़े। जा देख के दूसरो पहलबान सोच में पड़ गओ कि जो तो बड़ो बलबान हे।

कुस्ती सुरू भई तो पण्डा पहलबान ने कई, “मुखिया में तो बोई काम करहूँ।” मुखिया ने कई, “नई नई गुरूजी में तुमरे हाथ जोड़ रओ हूँ बो काम मत करियो।” पण्डा पहलबान ने कई, “में ठाकुर जी की साँ खाके आओ हूँ, करहूँ तो बोई काम करहूँ।” दूसरे पहलबान ने मुखिया हे बुलाके पूछी, “जो पण्डा पहलबान कुस्ती लड़बे आगे नई आ रओ, बस एकई रट लगा रओ हे में बोई काम करहूँ?” मुखिया ने पहलबान हे एक कोना में ले जाके बाके कान में कई, “जो भोतई खतरनाक बाव्हन हे, परसराम के कुल को। जाने अपने गुरूजी से कहके आओ हे आज में कुस्ती लड़बे के पेलेई पहलबान की टाँग पे टाँग धरके चीर देहूँ।”

दूसरो पहलबान जा बात सुनके डर गओ ओर बाने चोपाल छोड़के गदबद लगा दई। सबरे गाँओं बारे पण्डा पहलबान की जय-जयकार करन लगे। मुखिया की हुसियारी से गाँओं की इज्जत बच गई।



जीजा के चार सारे रहत हैं। जीजा रहत हे नग ओर चारई सारे रहत हैं ठग। बे जीजा हे तंगात रहत हैं। कभऊँ भी कछु भी माँगबे चले आत हैं, भलेई बा चीज जीजा के जोरे होय या न होय। एक बार का भओ चारई सारे जीजा के झाँ रुपया-पईसा माँगबे गए। जीजा ने बिन्हें टरकाबे काजे बोलो, “मेरे जोरे तो फूटी कोड़ी भी नईहौ। फिर कभऊँ अजइयो, में इन्तजाम करके धरहूँ।”

जीजा के झाँ एक सीकों थो। बा पे एक कुम्हड़ा धरो थो। चारई सारे ने जीजा से पूछी, “जीजा जो सीके पे का धरो हे?” जीजा बोलो, “हथ्थी को अण्डा हे।” छोटी सारे बोलो, “तबई तो इत्तो बड़ो हे।” बड़ो सारे बोलो, “जीजा जीजा, जामें से हथ्थी के कित्ते पिल्ला निकर हैं?” जीजा बोलो, “भोत सारे! मूरखों तुम्हें तो जा भी नई मालुम हुए जिन्दो हाथी लाख को होत हे ओर मरो हाथी सबा लाख को।” सारे बोले, “जो अण्डा तो हमें चइए।” जीजा बोलो, “फोकट में तो में देहूँ ने, काय से जो भोत मेंघो हे।” बड़ी चिक-चिक के बाद, बाने पाँच सो रुपैया में बो अण्डा सारों हे टिका दओ।

बड़ो सारो अण्डा अपने कन्धा पे धरके घर लेके चलो। अण्डा हथो बड़ो भारी। बो पसीना-पसीना हो गओ। एक दरे में बा की धोती उरझ गई ओर बो कुम्हड़ा धम्म से, दरे में गिर पड़ो। बई दरे में सुअर बठे थे, बे निकर-निकरके भगे। सारे बोले, “सत्यानास हो गओ! जे हाथी के सबरे पिल्ला भगे जा रए हैं, बिन्हें पकड़ो।” बिनने सुअरों के पीछे खूब गदबद लगाई पर एक भी सुअर हाथ नई आओ। रह गए सबरे अपनो करम ठोंक के।

फिर कछु दिना बाद सारे हुन जीजा के जोरे गए। जीजा ने अपनी घरबारी से कई, “जे फिर कछु जुगत से आए हैं। जरूर कछु न कछु मुसीबत खड़ी करहें।” जीजा ने घरबारी हे समझाओ, “में तोहे बेंसई-बेंसई मार हूँ। तू बेहोस होके गिर पड़िए।” अब जेंसई सारे घर में आए बेंसई बाने अपनी घरबारी की कुटाई करबो सुरू कर दओ। घरबारी बेहोस होके गिर गई। सारे भोतई गुस्सा होके जीजा से बोले, “हमरी बहन हे काय मार रए हो?” जीजा बोलो, “तुमरी बहन जब मोहे तंगात हे तो में बाहे ऐंसई पीटत हूँ।” सारों ने अपनी बहन हे हलाके देखी, बा कछु नई बोली। बिनने जीजा से कई, “तूने हमरी बहन हे मार डाली?” जीजा ने कई, “रुको!” जीजा झट से अपने कोठा में गओ। उते से एक बाँसुरी उठा लाओ ओर घरबारी के मूढ़ के जोरे बठके बाँसुरी बजाई, तो घरबारी उठके बठ गई। सारे देखके हेराण हो गए। बोले, “जो तो गजब हो गओ!” बिनने जीजा से कई, “जा बाँसुरी तो हमें चइए।” जीजा बोलो, “काय के लाने?” सारों ने कई, “हमरी घरबारिहें हमें भोत तंगात हे। हम भी उन्हें सुधार हें। जीजा ने कई, “जा बाँसुरी देके का बरबाद हूँ हों?” सारे बोले, “जीजा जे पकड़ों हजार रुपैया, बाँसुरी तो हम लेकेई जेहें।” जीजा ने रुपैया रखके कई, “ठीक हे, जैसी तुमरी इच्छा।”



सारे बाँसुरी लेके घर पौहचे। पौहचतई से बिनकी घरबारियों से खटपट हो गई। बिनने आओ देखो न ताओ घरबारियों की इत्ती पिटाई करी, की बे बेहोस हो गई। बे घरबारियों के मूढ़ के जोरे बैठके मोत देर तक बाँसुरी बजात रए, पर कुई भी होंस में नई आई। असपताल ले जाके बिनको इलाज कराओ तब बे ठीक भई। बिनके इलाज में सारों को मोत पईसा खरच हो गओ। गाँओं भर में धू-धू अलग से भई। बे जान गए जीजा ने हमरे संगे मोत बड़ो धोको करो हे। गुस्सा में बे तनतनात बदलो लेबे जीजा के घर चल दए।

जीजा उते तैयार बेठो थो की जे लोग कमऊँ भी आ सकत हैं। बाने अपनी घरबारी से कई, “में गेहूँ के कोठला में लुको जा रओ हूँ।” सारों ने आके पूछी, “जीजा काँ हे ? झट्दी बता।” बहन रोट-रोत बोली, “का बताऊँ भइया, तुमरे जीजा हे जेसई पता चलो की तुमरी घरबारियों हे असपताल ले जानो पड़ो, बे डरके मारे भई के भई ठण्डे हो गए। मने बिनकी लास उठाके भीतर बारे कोठला में धर दई हे। तुम लोग आ गए हो तो बिनको किरिया-करम भी कर दो।” बड़ो सारो बोलो, “में देख के आत हूँ। कहूँ बास तो नई आ रई।” जेसई बाने कोठला में झाँको, जीजा ने चक्कू से बाकी नाक काट दई। बो अपने हाथ से नाक दबाके बाहर भगो। छोटे सारे ने कई, “लग रओ हे सही में बसा रओ हे, में सुई देख के आत हूँ।” जेसई जाने भी कोठला में झाँको, जीजा ने सट्ट से बाकी भी नाक काट दई। बो भी नाक पे हाथ धरके भगो। ऐसई कर करके जीजा ने चारई की नाक काट दई। अब तो चारई सारों हे मोत गुस्सा आओ। बिनने कोठला फोड़ो ओर जीजा हे पकड़के बोरा में भर दओ ओर बोरा को माँ बाँधके बोले, “जाहे तो नद्दी में फेंक हें।”

चारई ने बोरा उठाके नद्दी की गेल धर लई। नद्दी थी दूर, बोरा दोत-दोत बे हेरान हो गए। चारई इते थक गए की बोरा उठात ने बने। बड़ो सारो बोलो, “चलो भइया गाँओं से बेलगाड़ी ले अइएँ।” बिनने उतई गेल में बोरा पटको ओर चल दए गाँओं। बोरा में जीजा तड़फड़ा रओ की कैसे बाहर निकरूँ। इते में भई से एक डुकरा अपनी बकरियों हे लेके निकरो। बाहे गेल पे बोरा दिखो। बाने बोरा को माँ खोलों तो बा में से जीजा निकरो। डुकरा बोलो, “काय भइया तोहे बोरा में कोन ने भर दओ ?” जीजा बोलो, “मेरे रिस्तेदार मेरो दूसरो ब्याओ कर रए ओर में करबाओ नई चाहूँ। जासे बे मोहे बोरा में भरके जबरजस्ती ले जा रए हें।” डुकरा बोलो, “तुम बड़े भागवान हो जो तुमरो दूसरो ब्याओ भी हो रओ हे। मेरो तो एकई ब्याओ नई भओ।” जीजा ने कई, “जा तो मोत अच्छी बात हे ! तोहे ब्याओ करवानो हे तो मेरी जिगगहा जा बोरा में घुस जा।” डुकरा बोरा में घुस गओ, जीजा ने बोरा को माँ कसके बाँध दओ ओर बोलो, “अब तो समझ तेरो ब्याओ होई गओ।” जीजा ने बकरिएँ इकट्ठी करी ओर दूसरी गेल से, घेर के अपने घर ले गओ।

इते चारई सारे बेलगाड़ी लेके आए ओर बोरा हे बेलगाड़ी पे धरके चल दए। बोरा में बेठो डुकरा मोत खुस हो रओ की मेरो ब्याओ अभई हो जेहे। बेलगाड़ी नद्दी पौहची। सारों ने बोरा उठाओ ओर टिहा पे से झुलाके बोले, “हथ्थी घोड़ा पालकी, जै जीजा लाल की।” ओर बोरा हे मोत गहरे पानी में फेंक दओ।

माँ से बे अपनी बहन के घर पौहचे। उते के हाल देखे तो सन्न रह गए। जीजा बकरियों हे पानी पिबा रओ थो। बिन्हें देखके जीजा हँसो। फिर बोलो, “तुम चारई बड़े मूरख हो, तुम लोगों ने मोहे उथले पानी में फेंको तो मोहे जे

बकरिएँ मिलीं। अगर मोहे गहरे पानी में फेंकते तो हथ्थी, घोड़ा मिलते।” चारई बोले, “सही में जीजा!” जीजा बोलो, “जे इत्ती बकरिएँ अपनी आँखों से नई दिख रई का!” चारई सारों ने कई, “जीजा हमें भी नद्दी में फेंको। जीजा हमें भी नद्दी में फेंको।” जीजा ने कई, “चलो मेरे संग।”

चारई हे बो नद्दी किनारे ले गओ। पहले बड़े सारे हे बाने झुलाके खूब गहरे पानी में फेंको। बो डूबन लगो तो हाथ पेर फड़-फड़ान लगो। इत्ते में मझलो सारो चिल्लाके बोलो, “जीजा मोहे भी झल्दी फेंक दे, बो अकेलेई सबरे हथ्थी-घोड़ा लूट ले रओ हे।” जीजा ने मँझले ओर सँझले सारे हे, एक-एक करके गहरे पानी में फेंक दए। छोटे सारे की बेरा आई तो बाने कई, “जीजा मोहे भी झल्दी फेंक, बे सबरे लूट ले रए हैं।” जीजा ने बा से कई, “अब माँ का धरो हे, तू तो मेरे संगे चल मेरी बकरिएँ चरइए।”





मिजबान

गेल - रास्ता

मिन्दो मेंढकी की कहानी

गाँकड़े - बाटी, आटे के गोले

कण्डे पर सेंककर खाते हैं

घेला - मटका

भड़या - चोर

जैसे को तैसा

मोड़ा-मोड़ी - लड़का-लड़की

गुनिया - ओझा

लकटकिया

ढोर - जानवर

खूँतो - गड़बड़ी

मूढ़ - सिर

भुनसारे - अलसुबह

जोरे - पास



लल्लू चोर

चिमाई लगाके - ध्यान लगाके

बर गओ - जल गया

पटमा - घर के अन्दर बना छज्जा

उन्नहा - कपड़ा

जादुई संख

बुहारी - झाड़ू

म्यार - लकड़ी के घरों में छत बनाने के

लिए लगाई जाने वाली मोटी लकड़ी।

गोई - दोस्त

चिलक - चमक

ऐरो - हल्ला

उलात - जल्दी

पत्ता भर भत्ता

गरई - भारी

बिट्टया - थक

दिल्ली की गप्प

असफेर - आस-पास

तला - तालाब

रिंगके - पैदल चलकर

चिड़ा-चिड़ी

सपरबे - नहाने

मेहनत को फल

गेरहोंस - बेहोश

पण्डा पहलबान

गदबद - दौड़

महाठग

कुम्हड़ा - कद्दू

दरा - बेर की झाड़ी

प्रदीप चौबे

विगत बीस वर्षों से शिक्षा के लोकव्यापीकरण में जुटे हैं। विभिन्न सृजनात्मक बालगतिविधियों एवं समुदाय के साथ काम करने में दक्ष। वर्तमान में एकलव्य में शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम के बाबई क्षेत्र के समन्वयक के रूप में कार्यरत।

महेश बसेड़िया

नाटक, ऑरीगैमी, कला, विज्ञान सम्बन्धी गतिविधियों और फोटोग्राफी में विशेष रुचि और अनुभव। एकलव्य में लम्बे समय से कार्यरत।

अतनु राय

पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से चित्रांकन में लीन। बच्चों की चित्रकथाओं पर काम करना इनके कैरियर का सबसे ज्यादा सन्तोषजनक हिस्सा रहा है। विभिन्न शैलियों और माध्यमों का उपयोग करते हुए सौ से भी ज्यादा बच्चों की किताबों का चित्रांकन किया है। पुस्तकों का रूपांकन, चित्रांकन और कार्टून बनाने के साथ ही उद्योग जगत के लिए ग्राफिक डिज़ाईनिंग भी करते हैं। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

एकलव्य एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका **चकमक** के अलावा **स्रोत** (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा **शैक्षणिक संदर्भ** (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in

ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016



किस्से-कहानी कहना और सुनना पुरातन काल से ही हमारी परम्परा का हिस्सा रहा है। पर अब ये कहानियाँ स्मृतियाँ बनती जा रही हैं और बिखरकर गुम होती जा रही हैं।

बुन्देलखण्डी लोककथाओं का यह संकलन ऐसी ही बिखरी हुई कहानियों को समेटकर इन्हें अलग-अलग इलाकों के पाठकों तक पहुँचाने का एक प्रयास है।

इन कहानियों में बहुत रस है, अनेक स्वाद हैं। आइए, हमारे मिजवान बनकर इनका आनन्द लीजिए।

ISBN: 978-81-89976-48-4



9 788189 976484



मूल्य: 30.00 रुपए



A0102H